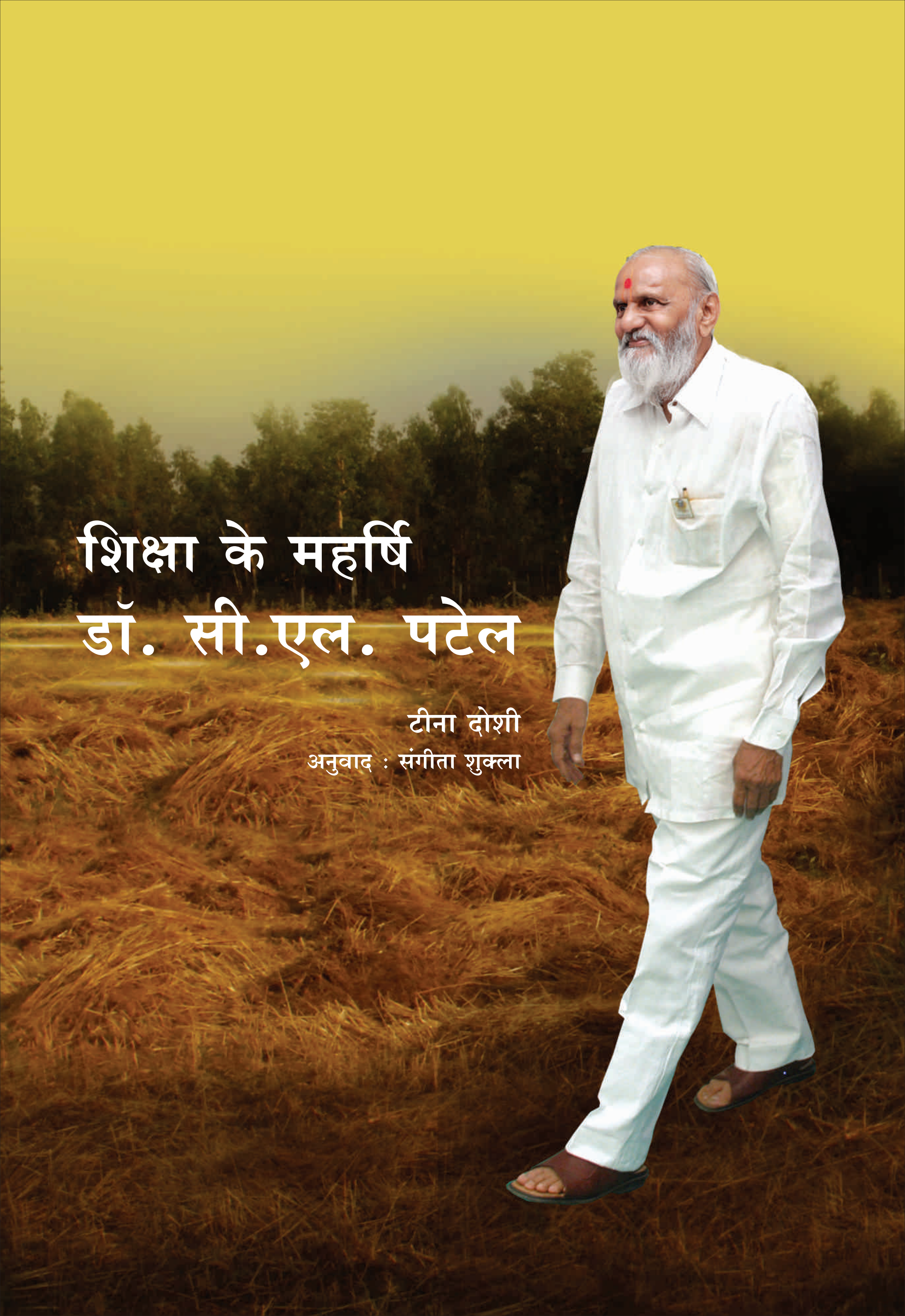

शिक्षा के महर्षि डॉ. सी.एल. पटेल

टीना दोशी

अनुवाद : संगीता शुक्ला

शिक्षा के महर्षि
डॉ. सी.एल. पटेल

टीना दोशी

अनुवाद : संगीता शुक्ला

प्रकाशक

शिक्षण महर्षि डॉ. सी.एल. पटेल अमृतपर्व उत्सव समिति

सेरलिप कैम्पस, सीवीएम बंगलो-१८,

भाई काका लायब्रेरी के सामने

वल्लभ विद्यानगर - ३८८ १२०, गुजरात

Shiksha Ke Maharshi : Dr. C L Patel

by

TINA DOSHI

© टीना दोशी

प्रथम संस्करण

नवम्बर २०१०

कवर

कनु पटेल

लेआउट व टाइपसेटिंग

लज्जा कम्यूनिकेशन्स

दूसरी मंजिल, सुपर मार्केट, राजेन्द्र मार्ग,

नाना बजार, वल्लभ विद्यानगर

प्रिन्टर

आणंद प्रेस

गामडी, जि. आणंद

फोन : (०२६९२) २५३९३३

प्रकाशक

शिक्षण महर्षि डॉ. सी.एल. पटेल अमृतपर्व उत्सव समिति

सेरलिप कैम्पस, सीवीएम बंगलो-१८,

भाई काका लायब्रेरी के सामने

वल्लभ विद्यानगर-३८८१२०, गुजरात (भारत)

फोन : (०२६९२) २३३१९१

यहां वल्लभ विद्यानगर में मैं आया, चारुतर विद्यामंडल में काम करने का मौका मिला, भाई काका–भीखाभाई साहब और एच.एम. पटेल साहब द्वारा शुरु किए विद्या के यज्ञ को प्रज्वलित रखने के प्रयत्न में मुझे इस जिम्मेदारी को संभालने का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ, उसका मुझे गौरव है । शिक्षा के इस व्यवसाय में मैंने शिक्षा के कार्यों को सीखा । मेरे साथीगण, हजारों शिक्षकों, प्राध्यापकों और आचार्यों से मुझे बल मिला । मेरे इस भगीरथ कार्य में आदरणीय दाताओं की तरफ से और सैकडों विद्यार्थी भाइयों – बहनों की तरफ से सहयोग और मेरे परम गुरु साक्षात ब्रह्मस्वरुप प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज का आशीर्वाद और भगवान स्वामीनारायण की कृपा सदैव मेरे साथ रही है ।

सी.एल. पटेल (५–४–२०१०)

अर्पण

उन सभी को जो सदैव शिक्षा पाने के लिए संघर्षरत रहते हैं...

प्रस्तावना

करीब दो वर्ष पहले ही मैंने चारुतर विद्यामंडल के कार्यालय में डॉ. सी.एल. पटेल को पहली बार देखा था। माथे पर लाल टीका, सफेद पहनावा एवं सफेद दाढ़ी । १६ जुलाई, २००८का वह दिन था । डॉ. पटेल से मुलाकात के बाद मैंने श्री हरि को कहा थाः यह तो प्राचीनकाल के ऋषि की तरह दिखते हैं।

उस समय डॉ. सी.एल. पटेल के बारे में मैं कुछ ज्यादा जानती न थी, लेकिन उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व ने जरुर मेरे अंतर्मन पर एक छाप छोड़ी थी । मेरा लालन-पालन, पढाई और पत्रकार या लेखिका के रुप में मैंने अपने कैरियर की शुरुआत मुंबई से ही की थी। बाद में गांधीनगर और अहमदाबाद में रहने का अवसर मिला । तब मैंने चारुतर विद्यामंडल और डॉ. सी.एल. पटेल के बारे में सुना था, लेकिन उनसे मुलाकात का अवसर नहीं मिला था । लेकिन जब उनसे मुलाकात का अवसर प्राप्त हुआ तो उनके व्यक्तित्व ने ऐसा प्रभाव मेरे मानस पटल पर छोड़ा कि जिसे भुला पाना असंभव था।

उन्होंने श्री हरि को चारुतर विद्यामंडल के साथ जुड़ने का प्रस्ताव रखा और हमने उसे सहर्ष स्वीकार करते हुए विद्यानगर में अपना डेरा जमाया । तत्पश्चात डॉ. पटेल की पारदर्शिता और प्रामाणिकता, निष्ठा, नीतिमत्ता, निडरता और स्पष्टवक्ता के बारे में जानने को मिला । मुंबई के समकालीन दैनिक अखबार में ''गूर्जर गौरव'' नामक शीर्षक के अंतर्गत लिखने के लिए मैं महानुभावों से मुलाकात लेती रहती थी । डॉ. पटेल के मिलने के बाद मुझे ऐसे लगा कि उस समय यदि मैंने इनकी मुलाकात ली होती तो अधिक अच्छा रहता । इतने महान व्यक्तित्व का पुस्तक के रुप में अवतरण अवश्य होना चाहिए ।

उस समय जो न हो सका वह अब संभव हो सका । संयोगवश डॉ. पटेल के अमृतपर्व (७५ वर्ष के होने के उपलक्ष्य में समारोह) के समय मुझे उनका साक्षात्कार लेने का काम सौंपा गया । मानो मेरे तो मन की मुराद ही पूरी हो गई । उन्होंने लगातार एक सप्ताह तक मुझे अपना समय दिया । कभी एक घंटा तो कभी डेढ़, कभी-कभी तो दो से ढाई घंटे तक, वे अपनी शरारतें, स्कूल का विद्यार्थी जीवन, शिक्षकों के प्रति प्रेम भावना, फिल्में देखने के शौक़, कॉलेज जीवन की मधुर यादों के साथ गुजरात विद्युत बोर्ड में किये गये काम के बारे में उन्हीं के मुख से सुनने का सुनहरा

अवसर मुझे प्राप्त हुआ । सेन्टर फॉर रिसर्च एन्ड स्टडीज़ ओन लाइफ एन्ड वर्क्स ओफ सरदार वल्लभभाई पटेल – (सेरलिप) में इतिहास के एम.फिल के छात्र रहे गिरीश राठोड ने डॉ. सी.एल. पटेल के साथ ली गई मुलाकात का रिकार्डिंग किया । डॉ. पटेल ने कैमरे के सामने अपने माता–पिता के साथ के मधुर संस्मरणों को याद किया। साथ ही चारुतर विद्यामंडल में सहमंत्री और तत्पश्चात् अध्यक्ष के रुप में अपनी कार्यशैली की बातों का खुले दिल से विवरण दिया । उनके जीवन के संघर्ष, अवरोध और चुनौतियों से भरे समय के बारे में बताया। संकटमय परिस्थितियों से कैसे वे बाहर निकले एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना उन्होंने कैसे किया यह सब सुनने से एक रोमांच का अनुभव हुआ । डॉ. पटेल के साथ सात घंटे की लंबी मुलाकात के बाद ऐसा लगा कि यह केवल सिद्धियों की गाथा नहीं है, अपितु एक अभूतपूर्व साहस कथा है । यह कथा केवल उनकी जीवनी ही नहीं लेकिन दूसरों के लिये प्रेरक एवं प्रोत्साहक गाथा है ।

एक समय था जब इस धरती पर सतयुग था, ऐसा सुना था, लेकिन डॉ. सी.एल. पटेल से मिलने के बाद इस कलियुग में सतयुग के संत से मिलने की अनुभूति हूई । आपको भी यही अनुभूति होगी ऐसा मेरा दृढ विश्वास है ।

यह कार्य मुझे सौंपने के लिए मैं शिक्षा के महर्षि डॉ. सी.एल. पटेल के अमृतपर्व उत्सव समिति की आभारी हूँ । गुजराती एवं अंग्रेजी में इसका प्रकाशन होने के बाद दिल्ली निवासी श्रीमती संगीता नीलेश शुक्ला ने इसे हिन्दी में अनुदित किया । अतः उनका सविशेष आभार प्रदर्शित करती हूँ । हिन्दी संस्करण के परामर्शन सहयोग के लिये नलिनी आर्ट्स कॉलेज के प्राध्यापक डॉ. शिवप्रसाद शुकल की विशेष आभारी हूँ । पुस्तक का आवरण तैयार करने के लिए श्री कनुभाई पटेल, टाइप सेटिंग के लिए लज्जा कम्यूनिकेशन्स टीम की आभारी हूँ एवं श्री अन्तोन चौहाण और श्री रीकेश पटेल के अमूल्य समय योगदान के लिए उनके प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ ।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आप अपना प्रतिभाव देंगे तो मुझे अच्छा लगेगा ।

टीना दोशी
सी.वी.एम. बंगला नं. ११,
गो.जो. शारदा मन्दिर के सामने,
भाई काका प्रतिमा के पास,
वल्लभ विद्यानगर–३८८१२०
जि. आणंद, गुजरात
ई–मेइल : parultina@gmail.com
फोन : 09898070205
लाभपंचमी, १० नवम्बर, २०१०

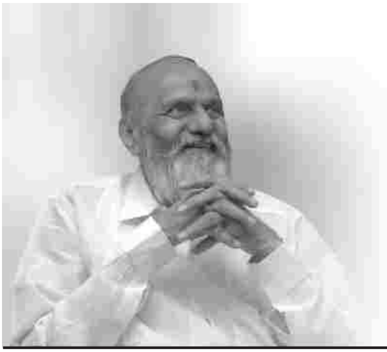

शिक्षा के महर्षि
डॉ. सी.एल. पटेल

प्रभावशाली एवं रौबदार व्यक्तित्व, प्रामाणिकता के पर्यायवाची, नीतिमत्ता के पूजारी, नस-नस में निर्भयता से भरपूर, दृढ़ मनोबल वाले, विषम परिस्थितियों एवं चुनौतियों का डटकर सामना करने वाले, दृढ निश्चयी, अवरोधों से भी न डरने वाले एवं बाढ़ में भी पानी के बहावसे उल्टी दिशामें तैरने का साहस दिखाने वाले...

यह वर्णन दस व्यक्तियों का नहीं अपितु एक ही व्यक्ति का है, जिसके नाम के आगे दस तरह के विशेषण लगाए गये हैं । बोलो, कौन है यह व्यक्ति ?

छोटुभाई लल्लूभाई पटेल... चारुतर विद्यामंडल के अध्यक्ष । चरोतर में, गुजरात में और गुजरात से बाहर भी वे डॉ. सी.एल. पटेल के नाम से ही पहचाने जाते हैं । करीब छ फीट जितने ऊंचे, चेहरे पर चमक, आंखों में तेज, चमकता माथा और इस पर तिलक, सफेद वस्त्र और सफेद दाढी में प्राचीनकाल के ऋषि की तरह दिखने वाले डॉ. सी.एल. पटेल गुजरात का गौरव हैं । वे चरोतर-रत्न हैं । शिक्षा के महर्षि हैं । मैनेजमेन्ट गुरु हैं । न्यू विद्यानगर के

विश्वकर्मा हैं । गुजरात के स्व वित्तपोषी महाविद्यालयों के प्रणेता हैं । जन्म से किसान एवं व्यवसाय से इन्जीनियर ऐसे डॉ. पटेल पिछले सोलह वर्षों से ईमानदारी से गुजरात के सबसे बड़े शिक्षा संकुल चारुतर विद्यामंडल का सफल सूत्र संचालन कर रहे हैं । करोड़ों रुपयों का लेन-देन करते हैं । लेकिन उनका चरित्र शुद्ध है एवं उनके सफेद वस्त्रों पर एक भी दाग नहीं लगा है । जैसी कथनी वैसी ही करनी का अनुसरण करने वाले डॉ. पटेल का व्यक्तित्व शत प्रतिशत खरे सोने जैसा है । उनकी छत्रछाया में चारुतर विद्या मंडल की करीब ४५ संस्थाएं सतत प्रगति कर रही हैं । शिक्षा के क्षेत्र की ही तरह सामाजिक क्षेत्र में भी उन्होंने कुशल नेतृत्व किया है और आज भी कर रहे हैं ।

''मुझे नेतृत्व का गुण विरासत में मिला है''... न्यू विद्यानगर के हरेभरे प्रकृतिमय सुंदर वातावरण में अपनी मुलाकात देते हुए छोटुभाई अतीत में खो जाते हैं : ''मेरे पिता लल्लूभाई गामडी गांव के मुखिया थे । गांव में एक ही परिवार के वारिस ही मुखिया बनते आ रहे थे, लेकिन एक समय उनका वारिस छोटी उमर का था । इसलिए लल्लूभाई ने मुखिया की गद्दी संभाली । अंग्रेज सरकार के राज में तालुका स्तर पर उनका काफी दबदबा था । कई लोगों के काम वे करते थे । सरकार भी उनके द्वारा रखे जाने वाले प्रस्तावों को ध्यान में लेती थी । गांव का जो मुखिया होता था वही पूरे गांव का लेखा जोखा भी रखता था । हर वर्ष मजदूरी के रेट फिक्स करते । हमारे गांव के दानवीरों ने जो जमीन दान में दी हों, उनमें से कोई जमीन महादेव (शंकर भगवान) के लिए हों तो कोई राम भगवान के मंदिर के लिए, यह सब वे ध्यान में रखते । गांव के कुत्ते का भी वे ख्याल रखते थे । बरसात के दिनों में वे कुत्ते को भी बाजरे की

रोटी व शीरा (हलवा) खिलाते, इसलिए उसका भी जमीन में भाग, इसी प्रकार अन्य सभी जमीनों का लेखा जोखा भी करना पडता था, यह सब कुछ मेरे पिताजी किया करते थे । महादेव का लेखा जोखा करना हो तो सावन के महीने में ब्राह्मण भोज की व्यवस्था भी करते । इसी प्रकार होली का त्यौहार हो, नया साल हो, रामनवमी हो या जन्माष्टमी, सभी त्यौहार के हिसाब से खर्चा दे देते । मेरे पिता हमेशा कहा करते थे कि मैं घर में पैसा नहीं लाऊंगा । धर्मदाताओं का यदि एक पैसा भी घर में आ जाय तो वह पेट चीरकर निकल जाता है । दूसरी एक बात भी वे कहते कि, ''हमारे ऊपर जब जिम्मेदारी सौंपी गई हों तब हम किसी का भला न कर सकें तो कम से कम किसी का बुरा तो नहीं करना चाहिए।''

लल्लूभाई द्वारा दी गई शिक्षा दीक्षा को छोटुभाई ने अपनाया । लल्लूभाई द्वारा दिये गये संस्कारों से नीतिमत्ता व नेतृत्व का पाठ वे सीखे । जिस प्रकार मछली के बच्चों को तैरना नहीं सिखाना पड़ता, उसी प्रकार पिता के संग में छोटुभाई को बचपन में ही नेतृत्व का रंग चढ़ गया था । पिता को गांवों का नेतृत्व करते देख छोटुभाई ने युवाओं का मोर्चा संभालते हुए एक युवा टीम बनाई । सभी मिलकर गांव की सफाई करते, कुएँ, हवाड़ा (चरही) साफ करते।

''उस समय रेंटिया बारस-गांधीजी के जन्मदिन पर चरखा कातने का बहुत महत्व था...'' बचपन की बात कर रहे ७५ वर्ष के छोटुभाई मानो बच्चे बन गये थे: '' रेंटिया बारस के दिन हम गांधीजी को जितने वर्ष हुए हों उतने दीपक जलाते । हम ब्रह्मदेश से सिंगापुर तक का नक्शा बनाते और उसके चारों

ओर दीपक रखते थे । फिर हम मंच पर नाटक करते, तालाब के चारों ओर वृक्षारोपण करते थे, जिसमें नियम बनाया गया था कि हरेक को कम से कम पांच बालटी पानी भरकर वृक्षों को सींचना है ।''

इस प्रकार समय बीतता गया । समय के साथ-साथ छोटुभाई की नेतृत्व शक्ति में भी निखार आता गया । जब वे मैट्रिक में पहुंचे तो उन्होंने अनपढ़ लोगों को पढ़ाना शुरु किया । वे बताते हैं कि - ''उस समय धर्मशाला में दरवाजे नहीं हुआ करते थे, केवल एक तख्ता था । हम दो लालटेन लेकर जाते थे । एक लालटेन वहां लगाते और दूसरी नीचे रखते । कोई अधिक उमर का व्यक्ति हो, कोई रबारी, कोई भरवाड जाति का हों, उन सभी को हम पढ़ाते । इस प्रकार अनपढ़ लोगों को पढ़ाने की एक नई शुरुआत हमने की थी ।''

इन्हीं दिनों एन.एस.एस. की प्रवृत्तियां भी बहुत चल रही थीं । छोटुभाई एन.एस.एस. के विद्यार्थियों को भी आमंत्रित करते । उनके साथ मिलकर गांव में रास्ते बनाते । उसमें से पैसे बचाते । बताते हैं कि - ''हमारे गांव में जो पंचायत का घर है उसके ऊपर पुस्तकालय बनाया था । यह बात करीब १९५४ की है, उस जमाने में तेरह हजार पांच सौ रुपयों की लागत से एक बडी बिल्डिंग बनाई गई थी । युवक मंडल की प्रवृत्तियों में से पांच हजार रुपये बचाये थे और पांच हजार

लल्लूभाई

सरकार ने दिये थे । बाकी जो कम पड गये उसके लिए हरेक के पास से ढाई सौ-ढाई सौ रुपये इकट्ठे किये गये । सबसे पहले मेरे पिताजी से रुपये लिये गये थे । मुझे याद हैं कि उस दिन मैं एक व्यापारी के पास से ढाई सौ रुपये लेने के लिए गांव से बड़ौदा (वडोदरा) तक साइकिल पर गया था ।''

इस प्रकार दृढ विश्वास, निष्ठा और इच्छाशक्ति से छोटुभाई ने गांव में पुस्तकालय बनाया । युवक मंडल में क्रिकेट और कैरम खेलने के साधन जुटाए गये । लड़के संगठित होकर रहें इसके लिए वे प्रयत्नशील रहते । ''किसी को यदि हम मदद कर सकें तो मदद करनी चाहिए ।'' लल्लूभाई के इसी सिद्धांत का अनुसरण कर छोटुभाई ने बचपन में ही नेतृत्व के गुणों को साकार किया था ।

पिता लल्लूभाई से नेतृत्व के अलावा निडरता भी उन्हें विरासत में ही मिली है, इस बात का छोटुभाई गर्व के साथ बयान कर रहे थे । वे बताते हैं कि - ''मेरे पिताजी बहुत ही हिम्मत वाले थे । उनकी हिम्मत की दाद देना चाहिए। जब से मैं समझदार हुआ तब से लेकर उनके देहांत तक मैं उनसे नजरें नहीं मिला पाता था । वे अपने पास बंदूक रखते थे । उनके समय में उन्होंने दो लूटेरों को पकड़वाया था । जिसके लिये उन्हें अंग्रेज सरकार के राज में बहादुरी के दो सर्टिफिकेट भी मिले थे ।''

छोटुभाई ने अपने पिता लल्लूभाई और लूटेरों के बीच खेले गये जंग की जब बात करनी शुरु की तब रोंगटें खड़े कर देने वाली घटना याद आ गई, उन्हीं के शब्दों में उस घटना का वर्णन -

''करीब १९४७ का समय... मैं उस समय दसवीं में पढ़ता था । उस समय

हमारे गांव से एक ट्रेन पास हुआ करती थी । डाकोर लेन की कोई भी गुड्स ट्रेन हों, तो आणंद से सिग्नल के पास पहुंचने तक सीटी बजाती थी । उस समय लूटेरों ने हमला किया । तब बिजली नहीं हुआ करती थी । मैं अपने घर की पहली मंजिल पर लालटेन की रोशनी में पढ़ रहा था । तभी मेरे पिताजी बंदूक लेने आये और लेकर निकल पड़े । मैं भी उनके साथ बाहर निकला । जहां बंदूकधारी और हथियारधारी हों, वहां हिम्मत करके आगे जाने का कोई सोच भी नहीं सकता, लेकिन मेरे पिताजी गये।''

''यह घटना दूसरी गली में घट रही थी । जिनके घर में लूटमारी की वहाँ जाकर लूटेरों ने घर के मालिक का नाम जोर से पुकारा, जितनी देर में घर का मालिक बाहर निकलकर उन्हें पहचानने की कोशिश करे उतनी देर में लूटेरों ने उस पर हमला बोल दिया, जिससे उसकी कलाई में चोट आ गई । दूसरा व्यक्ति जोर से चिल्लाया कि ''मार डाला रे मार डाला, हमारे घर लूटेरों ने हमला बोल दिया है,'' जब वह खड़ा हुआ तो लूटेरें ने इसे देख कर उस पर गोली चलाई, जिससे इस व्यक्ति की एक आंख चली गई ।''

''मैं और पिताजी वहां गये । बाकी के लोग तो अपने घरों में दुबक गये थे। जिसे गोली लगी थी वह भी खाट के नीचे दुबक गया था । तब मेरे पिताजी ने एक युक्ति निकाली । वे जोर से चिल्लाये ''सभी ९ के ९ बंदूकधारी एक साथ आ जाओ और बदमाशों को मार गिराओ...'' वास्तव में वे अकेले थे और बंदूक भी एक ही थी, उससे उन्होंने हवा में गोली चलाई, उन्हें मेरा डर लग रहा था क्योंकि मैंने लालटेन पकड़ रखी थी । इसलिये कहीं लालटेन की रोशनी में लूटेरे दुबक या छिपकर मुझ पर गोली न चला दें । इस बात की उन्हें चिंता सता

रही थी ! फिर उन्होंने चुपचाप मुझे एक तरफ किनारे खिसकने का हाथ से इशारा किया, लेकिन मैं उनका इशारा समझ नहीं रहा था और वहीं डटकर खड़ा रहा । सामने से गोलियां दे दनादन... छूटे जा रही थीं... लेकिन अंत में पिताजी की बहादुरी से वे लूटेरे भाग खड़े हुए । यदि मेरे पिताजी ने उस समय हिम्मत न दिखाई होती तो लूटेरे गांव को बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाते ।

''जिनके घर में लूटेरे गये थे उनके पास रिवोल्वर और बंदूक दोनों थीं । लेकिन वे कुछ भी करने में असमर्थ रहे थे, जबकि मेरे पिताजी ने उन लूटेरों का हिम्मत से सामना किया था ।''

छोटुभाई को आज भी अच्छी तरह से याद है कि इस वारदात के दूसरे दिन विठ्ठलभाई साहब ने उनके लिए कहा था, 'बहादुर बाप का बहादुर बेटा ।'

बहादुर बाप के इस बहादुर बेटे को पिताजी की बहादुरी के अन्य कई किस्से याद हैं । इतिहास के पन्नों को खोलते हुए वे बताते हैं कि - ''हमारे गांव में सांप बहुत अधिक निकलते थे । मेरे पिताजी बंदूक से सांप को मार डालते थे । लोग सांप को मारने के लिए उन्हें अक्सर बुलाते थे । लेकिन जब वे बंदूक से फायर करते तब उसमें से छोटे-छोटे बुलेट के रुप में छर्रे निकलते थे । एक समय उस छर्रे से भगवान लालजी महाराज की मूर्ति टूट गई थी, तब से पिताजी ने बंदूक से सांप को मारना बंद कर दिया था ।''

गुजराती में कहावत है कि ''वड तेवा टेटा ने बाप तेवा बेटा'' अर्थात् जैसा बाप वैसा बेटा । इस कहावत के मुताबिक ही पिताजी की गैर मौजूदगी में छोटुभाई बंदूक से सांप मारा करते थे । भूतकाल को याद करते हुए वे बताते हैं

कि : ''एक बार छत पर सांप आ गया था । मैंने फायर किया तो सांप के दो टुकड़े हो गये थे । लेकिन फिर मेरी माताजी ने मुझे सांप को मारने से रोका था ।

छोटुभाई सांप को मारते थे लेकिन नाग को पवित्र मानते हैं । वे कहते हैं कि : ''जिस खेत में नाग रहता है वह खेत किस्मतवाला माना जाता है । हमारे एक खेत में तो तीन नाग रहते थे । आज भी हम जिस मकान में रहते हैं वहां भी नाग आता है । हम नाग को मारते नहीं हैं । मुझे मेरे चारों ओर नाग हो ऐसे सपने भी आते हैं । मेरे पोते और पड़-पोते भी नाग से नहीं डरते हैं ।''

पचहत्तर साल के छोटुभाई जब अपने पोते और पड़-पोतों को याद करते हैं तो उन्हें अपने दादाजी का स्मरण होता है । दादा-दादी, माता-पिता, गांव और कुटुंब की स्मृतियां सजीव हो उठती हैं । अपने जीवन में घटित अनेक प्रसंगों के मधुर संस्मरणों को याद करते हुए वे बताते हैं कि :

''आणंद के पास का गामडी मेरा गांव । दादा गरबड़दास-दादी जीबाबहन । उनके चार बेटे थे जिसमें मेरे पिताजी लल्लूभाई सबसे बड़े थे । जब दादाजी का स्वर्गवास हुआ तब मेरे पिताजी केवल १४ वर्ष के थे और उनका सबसे छोटा भाई केवल पांच वर्ष का था । पिताजी ने छोटी सी उमर में ही परिवार की जिम्मेदारियों को संभाला था । पिता की तरह ही छोटे भाईयों को संभाला था ।''

''पारिवारिक व्यवसाय खेती था । जो जमीन थी उसमें बारिस के पानी से खेती की जाती । खेती के साथ भैंस-बैल जैसे जानवरों की देखभाल करनी

पड़ती । अपने आप ही सब कुछ करना पड़ता था । खेती के औजार खरीदना । पिताजी के पास अच्छी किस्म के बैल व भैंसें थीं ।''

मैं पिताजी को दाजी कहा करता था । उन्हें पहली शादी से दो बेटियां थीं। लल्लूभाई की प्रतिष्ठा अच्छी थी । वे दूसरी शादी करना चाहते थे । उन दिंू पटेलों को दूसरी शादी करने के लिए कन्या नहीं मिलती थी । लेकिन दाजी को मिली । हमारे अन्य दो परिवार के लोगों को कन्या नहीं मिल रही थी । इसलिए पिताजी ने कहा कि जिस घर में कन्या के अलावा दो अन्य पुत्रियां होंगी वहीं विवाह करेंगे, इस प्रकार उन्होंने अन्य दो परिवारजनों का भी विवाह करवाया था ।''

''मेरे पिताजी की कुल ६ संतानो में से पांच बेटियां हैं । मैं अकेला ही बेटा हूँ । पिताजी भेदभाव नहीं करते थे । कभी-कभी मुझे कहते थे कि - १९२२ में जब तेरी सबसे बड़ी बहन की शादी हुई थी तब केले और पपीते से मंडप सजाया गया था, मंडप में फाउन्टेन भी था । उस समय वरपक्ष को पांच टंक (पांच बार) खाना खिलाना था, लेकिन खाना तीन बार में ही खत्म हो गया था । घी के इस्तेमाल में भी कोई कसर नहीं रखी गई थी । इसी प्रकार मेरी अन्य तीन बहनों की शादी भी धूमधाम से की गई थी।''

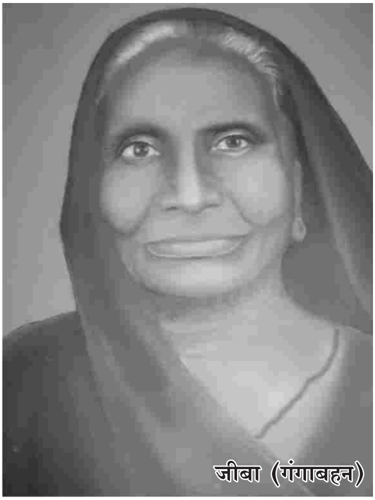
जीबा (गंगाबहन)

‘‘मेरी माताजी (बा) का नाम जीबा । दादीजी का नाम भी जीबा था इसलिए बा को जीबा उर्फ गंगाबहन कहते । उनका मायका आणंद तहसील के कासोर में था । मेरी माता से मैं एक ही बेटा था । १० अप्रैल १९३५ को मेरा जन्म हुआ था । बचपन में ही मेरे दो भाई और एक बहन का स्वर्गवास हो चुका था । हम केवल छ बच्चे बाकी बचे थे। उन दिनों यदि पारिवारिक सहायता न मिलती तो शायद जीना भी मुश्किल हो जाता । इसलिये जिस प्रकार मेरे पिताजी घर की जिम्मेदारियों को संभालते उसी प्रकार मेरी माताजी भी उनका पूरा साथ देतीं । जब मैं थोड़ा समझदार हुआ तब हमने दो भैंसें पाल रखी थी...’’

छोटुभाई माताजी को याद करते हुए संस्मरणों की दुनिया में खो जाते हैं : ‘‘माता के साथ की तो ढेर सारी यादें हैं । वे ताजा दूध पीने को देती थी । रोज हमें एक लीटर दूध देती । सर्दियों में घी से तरबतर करीब दस किलो खजूर हमें खिलाती । बेसन के लड्डू की तो बात हो कुछ और थी । खेत में से जामुन उतार कर रखती थी । मेरे बेटे को भी छूने नहीं देती थी । मेरे छोटु के लिए हैं, ऐसा वह कहती । एक बार माता के साथ बीएपीएस की योगी स्वामी ट्रेन में धार्मिक यात्रा करने भी गया था । डॉ. सी.एल. पटेल कहते है कि : ‘‘मेरी बा की आंखें बहुत अच्छी थी, उन्हें चश्मा नहीं लगा था. मोतियाबिंदु भी नहीं था, उनकी तरह मेरी भी आंखें अच्छी हैं ।’’

माता की तरफ से विरासत में मिली आंखों के तेज के कारण आज भी छोटुभाई की आंखें कमजोर नहीं हैं । उन्हें नंबर के चश्मे नहीं लगे हैं तो पिताजी की तरफ से उन्हें नीतिमत्ता, निर्भयता और नेतृत्व की विरासत मिली हैं ।

छोटुभाई माता और पिता की तरफ से मिली इस अमूल्य विरासत के कई प्रसंग आज भी उनके स्मृति पटल पर ताजा हैं । कुछ संस्मरण ऐसे भी हैं जो माता-पिता दोनों के साथ जुडे हुए हैं और वह है बचपन में मार खाने की यादें । छोटुभाई कहते हैं : ''मुझे माता-पिता दोनों ने बहुत मारा है क्योंकि बचपन में मैं बहुत ही ज्यादा शरारती था । कोई भैंस से दूध निकाल रहा हों तो उसके दूध में कचरा डाल देता । मेरी शरारतों के कारण लोग मुझे ''लल्लू गडबुनुं वांदरुं'' (लल्लू गडबदास का बंदर) कहते थे । घर में मेरी शिकायतें आती और फिर मुझे मेथीपाक (मार) मिलता था ।''

पीटाई का एक अन्य प्रसंग भी छोटुभाई को याद है, इस प्रसंग के बारे में वे बता रहे हैं तब उनकी उमर महज १० साल की थी : ''उन दिनों गांव में मेरे पिताजी बीड़ी और हुक्का पिया करते थे । मेरी जिम्मेदारी थी कि उनके उठने से पहले आग से उनका हुक्का भरकर उनके खाट के पास रख देने का । पिताजी उठकर बीड़ी-हुक्का पीना शुरु कर देते थे । उनको देखकर मेरे मन में भी विचार आता कि यदि मैं भी बीड़ी पीऊं तो कैसा रहेगा... खैर, बीड़ी तो न पी लेकिन उन दिनों ताज छाप सिगरेट आती थी । मैं कभी कभार उस सिगरेट को पीने का मजा लेता था । एक बार पिताजी को इस बात का पता चल गया, उन्होंने मुझे सजा दी थी ।''

''क्या सजा दी थी ?'' इस प्रश्न के उत्तर में डॉ. सी.एल. पटेल ने हँसते-हँसते कहा : ''सजा तो बहुत तरह की मिलती थी । एक रस्सी लेते उसे ऊपर कड़े के अंदर निकालकर मुझे उससे बांध देते और ऊपर लटका देते फिर दो-पांच डंडे मारते और पूछते कि फिर ऐसा करेगा । मैं मना करता तभी ही मुझे नीचे उतारते । लेकिन

उस प्रसंग के बाद सिगरेट पीने में मेरी कभी भी रुचि नहीं रही है।''

छोटुभाई ने सिगरेट पीना बंद कर दिया लेकिन फिर भी उनका मार खाना बंद न हुआ। लोग उनकी शरारतों की शिकायत लेकर आते थे इसलिए लल्लूभाई उन्हें मारते थे। छोटुभाई भी मार खा लेते, लेकिन बार-बार मार खाने से एक दिन उनकी धीरज का बांध तूटा और उन्होंने घर छोड़कर भाग जाने का निर्णय लेकर लिया। छोटुभाई के शब्दों में ही इसका वर्णन जानते हैं :

''एक दिन मेरे पिताजी ने मुझे इतना मारा था कि मैंने घर छोड़कर भाग जाने का निर्णय ले लिया, मैं भागकर एक इमली के पेड़ पर चढ़ गया। फिर घर वाले मुझे इधर-उधर ढूंढते निकले। मैं जिस इमली के पेड़ पर था उसके नीचे एक खतरनाक बैल था, इसलिए उस तरफ कोई मुझे ढूंढने आ सके ऐसी संभावना कम थी, लेकिन एक लड़की ने मुझे देख लिया। उसे लगा कि पेड़ पर बंदर से भी बड़ा कुछ दिख रहा है। उसने सभी को बताया कि छोटु तो यहां है, फिर सभी ने मुझे नीचे उतारा। पिताजी को गांव वालों ने धमकाया कि इकलौता बेटा है फिर भी आप उसे इतना क्यों मारते हो?''

अनेक बार मार खाने के पश्चात् भी छोटुभाई के मन में माता-पिता के लिए नफरत भावना कभी भी नहीं जागी थी। पिता के दिये संस्कारों के कारण ही उनका योग्य विकास हुआ है ऐसा छोटुभाई दृढ़ रुप से मानते हैं। पिता की नेतृत्वशक्ति और निडरता के साथ उनके परफेक्शन का स्मरण भी छोटुभाई के मानस पटल पर आज भी कायम है और उसी को याद करते हुए वे बताते हैं कि: ''मेरे पिताजी बहुत ही परफेक्ट थे, एक दिन खेत में चाकू भूल गये थे, उन्होंने वह लाने के लिए मुझे खेत पर भेजा। मैं रात को ढाई-तीन किलो मीटर

खेत में छोटुभाई, गामडी

पैदल चलकर खेत पर गया । भूत लोहे से दूर रहते हैं, रास्ते में भूत तंग न करें इसलिए मैं लोहे की वस्तु हाथ में लेकर चला था और खेत से चाकू वापस लेकर आया था ।''

पिताजी परफेक्ट होने के साथ-साथ उदार दिल के भी थे, यह बात छोटुभाई को आज भी याद है । उन यादों से जुड़ा हुआ एक प्रसंग छोटुभाई के हृदय में बस गया है । छोटुभाई कहते हैं कि : ''कभी-कभी मेरे चाचा के साथ मेरी अनबन हो जाती तो पिताजी कहते -

''सामने आम के पेड़ पर क्या दिख रहा है ?''

''वह आम जैसा है, लेकिन आम नहीं है ।''

''वह ओढो है... अर्थात् आम की डाली पर पक्षी को बीज रखते हैं उसमें से जो उगता है उसे ओढो कहते हैं... हमने किसी को पैसे दिये हो तो कुँए में

पैसे डाले हैं ऐसा समझकर उसे भूल जाना चाहिए । उसका खाता भी मत खोलो और उससे वापस भी मत मांगो । पिछले जन्म का कुछ हिसाब बाकी होगा ऐसा समझ लेने का ।''

लल्लूभाई की इस शिक्षा के बाद छोटुभाई ने यदि किसी को पैसे दिये हों तो उसे कुँए में पोटली डाली समझकर भूल गये हैं, उन्होंने न तो कभी उसका हिसाब रखा और न कभी उसे वापस मांगे ।

इसके अलावा भी लल्लूभाई द्वारा प्रदत्त अन्य तीन शिक्षा को भी छोटुभाई ने अपने जीवन में उतारा है : (१) अपने स्वजनों को अधिक प्रेम करना, (२) शादी या मरण के समय सभी रिश्तेदारों को जरुर याद करना और (३) बदला लेने की वृत्ति कभी भी नहीं रखना ।

बचपन की अनेक यादों का स्मरण छोटुभाई को आज ७५ वर्ष के होने के बावजूद भी ऐसे याद हैं मानो कल की बात हों । छोटुभाई को याद है कि वे होली के त्यौहार में गेडी दडो (बेट-बॉल) खेलते थे । खेतों में घूमने का बहुत शौक़ था । पूरे गांव में किस पेड़ पर सबसे मीठा आम लगा होगा इस बात की उन्हें जानकारी रहती थी । कंकोडा (परोड़ा) कहां उगते हैं और तोरई की सब्जी भी किसके यहां मीठी उगती है इसका उन्हें पता रहता और वे वहां से ले भी आते थे ।

छोटुभाई गांव के अन्य खेतों में घूमते थे लेकिन साथ ही अपने खेत में भी काम करते थे । वे बताते हैं कि : ''मैंने भैंसों को चारा डाला है, उनका गोबर भी साफ किया है, भैंस की सभी तरफ से देखभाल भी की है, उसे नहलाने-

धुलाने का काम भी किया है । घास की गठरियां भी उठाई हैं, हल भी चलाया है और बैलगाडी भी चलाई है । खेती करने के लिए जितना ज्ञान होना चाहिये वह सभी मैंने लिया है ।''

खेती के अनुभवों की बात कर रहे छोटुभाई को याद है कि लल्लूभाई के पास ४५ बीघा जमीन थी । कहते हैं - ''मेरे पिताजी अपने सबसे छोटे भाई के साथ मिलकर खेती करते थे । मैं सात साल का था । तब चाचा ने पिताजी को कहा अब आप अपनी अलग खेती करो... तब मेरे पिताजी ने कहा कि तुम २५ बीघा जमीन ले लो और मुझे २० बीघा दे दो । लेकिन पास में देना । इस प्रकार हमारे पास २० बीघा जमीन रही जिसमें हम तम्बाकू, धान, गेहूं, बाजरा, अरहर वगैरह की खेती करते थे । मुझे अच्छी तरह याद है कि उन दिनों मैंने अनाज की बोरियां भी उठाई थीं ।''

इस प्रकार छोटुभाई ने हकीकत में असली गाँव में रहने का आनंद उठाया है । गांव के लोग भी उनके ऊपर खास भावना रखते थे और कहते थे कि यह लल्लू मुखिया का बेटा है । छोटुभाई कहते हैं कि : ''लल्लू गरबड़दास का बेटा होने से मुझे तो ऐसा लगता था मानो मैं किसी राजा का बेटा हूँ ।''

इस राजा के बेटे का नाम बचपन में बुधियो था । इस संदर्भ में छोटुभाई हँसकर कहते हैं कि : ''मेरा जन्म बुधवार के दिन हुआ था इसलिए मुझे सभी बुधियो भी कहते थे । स्कूल में दाखिला लिया तब तक सभी मुझे बुधियो ही कहते थे । ब्राह्मण मुझे बुद्धिशंकर कहते थे । फिर एक दिन शिक्षक ने मेरा नाम मणिशंकर रखा, उसके बाद मेरे पिताजी ने मेरे जन्माक्षर किसी को दिखाये, उसमें मिथुन राशि निकली इसलिए फिर मेरा नाम छोटुभाई रखा गया ।''

छोटुभाई के संस्मरणों में जितने प्रसंग बचपन और घर-परिवार से जुड़े हुए हैं उतनी ही यादें उनके विद्याभ्यास के समय की भी हैं । आणंद की शारदा हाईस्कूल में उन्होंने प्राथमिक शिक्षा ली थी । उस समय लल्लूभाई के बहुत सारे मित्र थे जिनमें से एक का नाम रावजीभाई पटेल था, जो डी.एन. हाईस्कूल में होमगार्ड कमान्डर थे । उन्होंने लल्लूभाई से कहा अपने बेटे को डी.एन. में पढ़ने भेजो ।

''इसलिए पिताजी ने मुझे डी.एन. में पढ़ने भेजा ।'' अद्‌भुत स्मरण शक्ति वाले छोटुभाई ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा : ''उस समय छात्रालय में बहुत सारे ब्लॉक थे । मुझे १९ नंबर के मेहमान गृह में रखा गया । उस कमरे में मैं अकेला था । नौ-दस कब बजते मुझे पता नहीं लगता था लेकिन रात के ग्यारह बजे ग्यारह बार घंटा बजता था और बारह बजे बारह बार । मैं तो डरकर उठ जाता था और फिर पूरी रात मुझे नींद नहीं आती थी । दिन में मैं गेट पर खड़ा हो जाता था और गामडी गांव की तरफ कोई जाता तो उसके सामने रोने लगता । इस प्रकार तीन दिन बीत गये, फिर चौथे दिन मेरे पिताजी आकर मुझे घर वापस ले गये ।''

इस प्रसंग के बाद छोटुभाई गामडी से स्कूल जाते और वापस आते । लेकिन अब उन्हें एहसास है कि यदि उस समय वे होस्टल में रहते तो आज उनके पास जितना ज्ञान है उससे भी अधिक वे शिक्षकों के पास से ज्ञान ले सके होते । डी.एन. हाईस्कूल के प्रति आज भी उनके मन में आदरभाव है क्योंकि इसी स्कूल ने उनके जीवन को ढालने में मूल्यवान राह दिखाई हैं । स्कूल के सभी शिक्षकों को भी वे आज भी उसी आदरभाव से देखते हैं । प्रिन्सीपल ईश्वरभाई,

गणित सिखानेवाले रणछोडभाई, अंग्रेजी सिखानेवाले अमीन साहब, इतिहास के विठ्ठलभाई साहब और व्यायाम के सर न.रा. पंड्या को वे आज भी नहीं भूले हैं । छोटुभाई बताते हैं कि: ''स्कूल में रविशंकर महाराज, विनोबा भावे, बबलभाई महेता, दादा धर्माधिकारी और मावलंकर दादा जैसे अनेक महानुभाव आते थे । स्नेहरश्मि और सुंदरम् जैसे लेखक आते । इसके अलावा अनेक कवि और लोक सेवक भी आते थे । उनके प्रेरक प्रवचनों के कारण जीवन में किस प्रकार आगे बढ़ना चाहिए यह जानने को मिलता था ।''

छोटुभाई को आज भी आश्चर्य होता है कि वे उन दिनों कैसे स्कूल से घर अप-डाउन करते थे, इसे याद करते हुए वे कहते हैं : ''मुझे आज भी आश्चर्य होता है कि उन दिनों मैं कैसे स्कूल से घर अप-डाउन किया करता था क्योंकि आणंद से हमारे घर जाना हो तो बीच में ईसाईयों का कब्रिस्तान पड़ता है । उसमें क्रॉस रखे होते हैं । वहां तक जाने में भी डर लगता है । सर्दी के दिनों में कोहरे में तो ज्यादा डर लगता है । ऐसा लगता है कि मानो वहां से कोई आयेगा तो क्या होगा !''

सर्दियों की बात से छोटुभाई को याद आया कि उन दिनों दिनेश मिल का मोटा कपड़ा आता था । जिससे उन्होंने हाफपैन्ट, कोटी और कोट भी सिलवाये थे जिसे पहनने से ठंड से उन्हें राहत मिलती थी, यह भी उन्हें याद है ।

छोटुभाई की स्मरण शक्ति बहुत ही तीव्र और तेज हैं । अपने बचपन और विद्यार्थी जीवन की सभी घटनाएं आज भी उन्हें याद हैं । वे पर्यटन में जाते तो गिरनार तो धड़ाधड़ चढ़ते और उतरते और माउन्ट आबू तक बस में गये हों तो उतरते समय तो वे चलकर ही उतरते तब सामने अंबाजी माता के दर्शन करते

उसके वे हूबहू वर्णन करते हैं, मानो जैसे कल की ही बात हो । फिर से वे अपने बचपन को याद करते हुए बताते हैं कि - ‘‘उन दिनों व्यायाम का बहुत प्रभाव था । हमारे स्कूल में अंबुभाई पुराणी आते थे । वे व्याख्यान देते तब नीचे थाली रखनी पड़ती थी, उन्हें युवा पीढ़ी की इतनी फिकर होती कि वे बोलते-बोलते रो पड़ते थे ।’’

विद्यार्थी काल की एक अन्य मधुर स्मृति को याद करते हुए वे बताते हैं कि : ‘‘हम सभी गांव से पैदल अपना दफ्तर उठाकर आते थे, हमारे पास मुंह पोंछने के लिए रुमाल नहीं होते थे । इसलिए यदि नाक साफ करना हो तो हम अपनी कमीज की बाँही से उसे पोंछते थे । विठ्ठलभाई साहब हमें टोकते नहीं थे । लेकिन हमारे सामने उसकी नकल किया करते थे । तब से हम पिताजी की पुरानी धोती का कपडा या मां की साड़ी का टुकडा चारों ओर से सीलकर रुमाल की तरह उसका प्रयोग करना सीखे थे ।’’

इन्हीं दिनों भारत में स्वतंत्रता की लहर शुरु हुई थी । छोटुभाई को याद है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आंदोलनों में भादरण के शिवाभाई और विठ्ठलभाई साहब जेल गये थे । उनके सुपुत्रों की पढ़ाने की जिम्मेदारी ईश्वरभाई साहब ने उठाई थी । आणंद में डाककी चिठ्ठियां की चोरी करते, पत्रिकाएं बांटते । आंदोलनकारी बोम्ब बनाते । उन दिनों ‘‘आगे बढ़ो, आगे बढ़ो’’ गीत सुनकर छोटुभाई को भी उत्साह आया कि मुझे भी कुछ करना चाहिए ।

तब छोटुभाई बहुत छोटे थे इसलिए अधिक कुछ तो न कर सकें लेकिन राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान उन्हें सरदार वल्लभभाई पटेल और जवाहरलाल नेहरु को प्रत्यक्ष देखने का मौका जरुर मिला था । इस संदर्भ में छोटुभाई बताते हैं कि

: ''उस समय सरदार पटेल ट्रेन में से उतरे और पतली गली से होकर आये थे । अप्रैल १९४७ में सरदार आये थे उस समय मैं आया था । पंडित जवाहर नेहरु भी आणंद में ठहरे थे । उनकी गाड़ी के पीछे करीब ५०० लोगों का झुंड भाग रहा था । मुझे याद हैं उनमें से मैं भी एक था । धूलभरा रास्ता था । आगे गाड़ी जाती और हम उसके पीछे धूल से भरे हुए दौड़ते ।''

विठ्ठलभाई साहेब

छोटुभाई डी.एन. हाईस्कूल में थे तब इस प्रकार के अनेक यादगार अनुभवों से वे गुजरे हैं । वे बताते हैं कि : ''डी.एन. में आयोजित टूर प्रोग्रामों के कारण ऐतिहासिक और धार्मिक बातों को जाना था । महानुभाव स्कूल में आकर प्रवचन करते उससे जीवन में आगे कुछ करना है ऐसी प्रेरणा मिलती थी। डी.एन. में बच्चों का सर्वांगी विकास हों ऐसा वातावरण था । पिताजी के संस्कारो के साथ-साथ शिक्षकों के जीवन से लिए गये बोधपाठ के कारण जीवन को सही दिशा दे सका हूं ।''

डी.एन. में थे तभी छोटुभाई ने जीवन को किस दिशा में ले जाना है उसे सोच रखा था और भविष्य में आगे क्या करना है उसका भी दृढ निश्चय कर लिया था । पालि भाषा के साथ ११वीं क्लास अर्थात् मैट्रिक पास करने वाले छोटुभाई बताते हैं : ''मैं मैट्रिक में था तब डी.एन. में एस.एस.सी के बाद क्या करना चाहिए इसे समझानेवाला एक चार्ट बोर्ड पर लगाया गया था । उसमें

एस.एस.सी के बाद बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., इन्जीनियरिंग और भी क्या-क्या पढ़ सकते हो इस बात का मार्गदर्शन दिया गया था । मेरे पिताजी मुझे कलेक्टर बनाना चाहते थे लेकिन चार्ट को देखने के बाद मैंने निश्चय कर लिया कि मैं इन्जीनियर बनूँगा ।''

मैट्रिक पास करने के पश्चात छोटुभाई इन्जीनियर बनने की दिशा में आगे बढ़े । विद्यानगर के वी.पी. सायन्स कॉलेज़ में प्रवेश मिला । बस में, सायकिल पर या फिर कभी-कभी पैदल कॉलेज आया-जाया करते थे । इस समय के रेंगलर (गणित में विशेष पदवी प्राप्त करने वाले) माने जाते एन.एम. शाह प्रिन्सिपल थे । बच्चे उनसे डरते थे । छोटुभाई बताते हैं कि : ''हाल में सी.डी.सी. के डायरेक्टर आर.सी. देसाई जहां रहते हैं उस बंगले में एन.एम. शाह रहते थे । पास में ही शौचालय था । एन.एम. शाह बंगले में से बाहर निकलते तब उनको देख बच्चे शौचालय में घुस जाते थे । मैं भी घुस जाता था।'' लेकिन छोटुभाई के मन में एन.एम. शाह के लिए संपूर्ण आदरभाव है। उस समय उन्हें कॉलेज में जो भी प्रोफेसर पढ़ाते थे उन सभी को वे आदर भाव से याद करते हैं - डॉ. पी.सी. वैद्य और सी.एम. शाह गणित पढ़ाते थे । मांकड

वी.पी. सायन्स कॉलेज

सर रसायणशास्त्र पढ़ाते थे । आर.पी. पटेल फिजिक्स के डेमोन्स्ट्रेटर थे और आजकल वे चारुतर विद्यामंडल में मानद्‌मंत्री के रुप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं । अंग्रेजी प्रभु और ए.आर. दवे सिखाते थे ।

‘‘दवे सर इतनी अच्छी तरह से अंग्रेजी पढ़ाते थे कि क्लास छोड़ने का मन नहीं करता था...।’’ ‘‘यह सब बताते-बताते छोटुभाई को कॉलेज जीवन का एक अन्य रोचक किस्सा याद आ जाता है : ‘‘एक दिन दवे सर की क्लास थी । मैंने अपने दोस्त की जेब में से पेन्सिल निकाल ली, जिसे देख दवे सर बोले : सम बडी हैज स्टोलन समथींग फ्रोम सम बडीज पोकेट । इट इज एन आर्ट ऑफ स्टीलींग... मैं तो भौंचक्का रह गया यह सुनकर और तुरंत पेन्सिल वापस उसकी जेब में डाल दी ।’’

इस प्रकार के अनेक खट्टे-मीठे अनुभवों के साथ छोटुभाई ने कॉलेज का प्रथम वर्ष पूरा किया । उन दिनों उन्हें अमेरीका जाने का भूत सवार हुआ था, इसलिए वहाँ जाने के लिए प्रयत्न किये । लेकिन लल्लूभाई को उनके मित्र और रिश्तेदारों ने सलाह दी कि आपका इकलौता बेटा है इसलिए भलाई इसी में है कि आप उसे विदेश न भेंजे । फिर लल्लूभाई ने बेटे को विदेश भेजने का विचार छोड़ दिया था । उसके बाद छोटुभाई ने इन्टर सायन्स की पढ़ाई शुरु की । उस समय स्क्वेयर होस्टेल के ८० नंबर के रुम में वे रहते थे । उन दिनों के होस्टल के दिनों को याद करते हुए छोटुभाई बताते हैं कि : ‘‘उस समय मेरे साथी ८० रुपयों में अपना गुजारा चलाते थे लेकिन मैं ३०० रुपये खर्च करता था । तब मेरे मित्र कहते थे कि - छोटुभाई दारु पीकर पड़ा होगा तो भी लोग कहेंगे कि उसे ज्यादा दूध पीने से मिर्गी आई है, जबकि हम मात्र ८० रुपयों में गुजारा चलाते हैं

फिर भी हमें डांट पड़ती हैं और हमें आवारा समझा जाता है।''

छोटुभाई ने कभी भी शराब को हाथ नहीं लगाया लेकिन एक साल के लिए उन्होंने केपस्टन सिगरेट जरुर पी थी, फिर उसे भी छोड़ दिया । उन्हें अन्य कोई व्यसन या खराब आदत न थी । वे इन्टर सायन्स में थे जब पढ़ाई से मन भर गया था, उसके बारे में वे बताते हैं : ''मेरे एक चाचा के छ बच्चे थे और दूसरे चाचा के चार जबकि मैं अपने पिता का एकलौता बेटा था । इसलिये मेरे मन में खयाल आया कि मेरे पिता की सारी संपत्ति तो मेरी ही होगी, फिर मुझे पढ़ने की क्या जरुरत है ? ऐसा सोचकर मैंने ड्रोप लिया ।''

छोटुभाई पढ़ना नहीं चाहते थे, लेकिन लल्लूभाई बेटे को पढ़ा-लिखाकर बड़ा आदमी बनाना चाहते थे । उन्होंने खेती कराना भी छोड़ दिया था । १८ वर्षों तक उन्होंने छोटुभाई से खेतीवाड़ी नहीं करवाई थी । पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया । लल्लूभाई के जीजाजी यानि छोटुभाई के फुफाजी अहमदाबाद में रहते थे । इसलिए उन्होंने छोटुभाई को अहमदाबाद पढ़ने के लिए भेजा । छोटुभाई को अहमदाबाद की एम.जी. सायन्स कॉलेज में प्रवेश मिला । इन्टर सायन्स शुरु किया । यहां उन्हें पढ़ने में रुचि पैदा होने लगी थी ।

पढ़ाई के साथ-साथ छोटुभाई को फिल्में देखने का भी चस्का लगा था । वे बताते हैं : ''आणंद में तो टिकट मिल जाती थी, लेकिन अहमदाबाद में सवा रुपये की बाल्कनी के दस रुपये देने पड़ते थे लेकिन फिर भी मैं पिक्चर जरुर देखता था । उस समय मैंने भारत भूषण जैसी हेयर स्टायल भी रखी थी । वह दौर देव आनंद का भी था । एक बार मैंने अपने दोस्त के साथ पांच रुपये की

शर्त लगाई थी - कि तसवीर किसकी है ? उसने तसवीर देखकर बोला था कि अरे, यह तो देवआनंद है । लेकिन वह शर्त हार गया था क्योंकि हकीकत में देवआनंद की हेर स्टाइल में वह मेरी ही तसवीर थी ।''

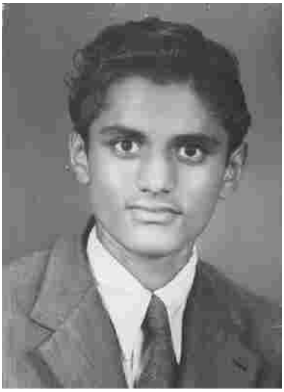

छोटुभाई देवआनंद की हेरस्टाईल में

हेर स्टाइल करवाने के लिए छोटुभाई भद्र के पास के प्रिन्स सैलून में जाते थे । उन्हें आज भी याद हैं कि तब हेर कटिंग का चार्ज आठ आने लगता था । इस बार उन्होंने स्टाईलिश कपड़े पहनने का भी शौक़ पूरा किया था । उसकी बात बताते हुए वे मंद-मंद हँसने लगते हैं : ''अहमदाबाद में मान्चेस्टर के कपडों के व्यापारी का बेटा प्रफुल्ल मेरा रुम पार्टनर था । वह कट पीस लेकर आता था । एक बार मैंने भी उन पीस में से कपड़े सिलवाये थे और उसे पहनकर अहमदाबाद से गांव जाने के लिए निकला तब रास्ते में ही डी.एन. के विठ्ठलभाई ने मेरी दाढ़ी पकड़कर कहाः 'क्यों भई, इतना सारा परिवर्तन आ गया ?' सर के टोकने के कारण फिर मैंने उस तरह के कपड़े पहनना ही छोड़ दिया था और अपने मूल कपडों पर आ गया।''

छोटुभाई

इस प्रकार के अनेक मजेदार अनुभवों के साथ छोटुभाई ने इन्टर सायन्स पास किया । फिर विद्यानगर की बी.वी.एम. इन्जीनियरिंग

कॉलेज में प्रवेश प्राप्त किया । उस समय बी.वी.एम. में डिप्लोमा और डिग्री दोनों कोर्स चलते थे । छोटुभाई को डिग्री में प्रवेश लेना था ।

डिग्री में प्रवेश लेने के लिए जरुरी ५८ प्रतिशत मार्क्स भी उनके थे लेकिन इन्टर सायन्स अहमदाबाद से किया था । इसलिए उनकी गिनती बाहर के छात्रों में की गई । एडमिशन में विद्यानगर के छात्रों को प्राथमिकता दी गई इसलिए

बी.वी.एम. इन्जीनियरींग कोलेज

फिर न चाहते हुए भी छोटुभाई ने डिप्लोमा में एडमिशन लिया । तब इलेक्ट्रिकल एन्ड मिकेनिकल दो कोर्स थे । यदि इलेक्ट्रिकल पढ़े हों तो एक साल में मिलेनिकल इन्जीनियर बन सकते हो । उसी प्रकार यदि मिकेनिकल का पढ़े हों तो एक ही साल में इलेक्ट्रिकल इन्जीनियर बन सकते थे । छोटुभाई ने मिकेनिकल की पढ़ाई पूरी करने के बाद इलेक्ट्रिकल की टर्म ग्रान्ट करवाई । मार्च महीने में परीक्षा थी और साथ ही उन्होंने गुजरात विद्युत बोर्ड में नौकरी के लिए आवेदन भी किया था । किस्मत से उन्हें वह नौकरी मिल गई । इसलिए फिर पढ़ाई को छोड़ वे नौकरी करने लगे ।

छोटुभाई गुजरात इलेक्ट्रिक बोर्ड में नौकरी करने गये तब लल्लूभाई ने उन्हें एक उपदेश दिया था कि : ''बेटा, तू सरकारी नौकरी करने जा रहा है, लेकिन तनख्वाह के अलावा अन्य किसी प्रकार के पैसे घर में नहीं आने चाहिए । धर्म दाताओं का पैसा तो पेट चीरकर बाहर निकल जाता है...'' छोटुभाई ने पिताजी के इस बोध पाठ को हमेशा ध्यान में रखा और सरकारी नौकरी में अनेक प्रलोभन और फिसलन वाली परिस्थितियों में भी खुद पर संयम रखा और तनख्वाह के सिवाय एक पैसा भी घर में न आने दिया ।

''मैं गुजरात विद्युत बोर्ड के साथ एकदम वफादार था...'' सरकारी नौकरी के दिनों को याद करते हुए छोटुभाई कह रहे थे : ''वैसे तो सरकारी नौकरी में पैसों की कमी नहीं होती । सरकार को नुकसान पहुंचाकर या किसी की जेब काटकर लोग पैसा बनाते हैं, मुझे भी बहुत से प्रलोभन दिये गये थे । लोग प्रसाद कहकर अपने गहने तक मेरे आगे रख जाते थे । लेकिन मैं उन्हें वापस भेजकर केवल इतना ही कहता था कि मैं भ्रष्टाचार न करुं इतना आप मुझे आशीर्वाद दें ।''

आशीर्वाद मिले भी और फल भी मिला । प्रामाणिकता के पर्याय बन चुके सी.एल. पटेल के सफेद वस्त्रों पर आज तक एक भी धब्बा नहीं लगा है । सफेद कपड़े केवल मात्र उनकी पोशाक नहीं हैं अपितु उनका स्वाभिमान भी है । डॉ. पटेल को मिलने वाले और उन्हें जानने वालों ने हमेशा उन्हें खादी के श्वेत वस्त्रों में ही देखा है । इस पहनावे के बारे में बात करते हुए छोटुभाई बताते हैं कि : ''भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाले गर्व के साथ बोलते कि सफेद वस्त्र पर धब्बा या दाग नहीं पड़ने दिया है, बस तब से मैंने भी सफेद वस्त्र

पहनना शुरु कर दिया... पढ़ता था तब वर्कशॉप में खाकी कपड़े पहनने पड़ते थे। मैंने खाकी कपड़े नहीं पहने । सभी खाकी कपड़े में और केवल मैं अकेला सफेद कपड़ों में । एक दिन वर्कशॉप के सुप्रिन्टेन्डन्ट ने मुझे खाकी कपड़े न पहनने पर नौकरी से निकाल देने की धमकी दी थी तब मैंने भी बोल दिया था कि - निकालना हो तो निकाल दो । लेकिन मैं खाकी कपड़े तो हरगिज नहीं पहनूंगा... इस प्रकार मैं सफेद कपडों में ही पढ़ा । अब तो अल्पा फाइनान्स वाले रमणभाई कहते हैं कि, ''देखो, सी.एल. पटेल सफेद कपड़े पहनते हैं, लेकिन उनके सफेद कपड़ों पर एक भी दाग लगा हो तो आप मुझे बताओ...''

इस प्रकार श्वेत वस्त्र सी.एल. पटेल का गौरव है । उनकी आन, बान और शान का प्रतीक है । उनके लिए यह भी कहा जाता है कि मेरु पर्वत शायद डगमगाया होगा लेकिन छोटुभाई कभी भी विचलित नहीं हुए । उन्हें इस बात का गर्व है कि नौकरी की शुरुआत से आज तक अपने सफेद वस्त्रों को उन्होंने मैला नहीं होने दिया है ।

''१ मार्च, १९६१ का दिन मेरी नौकरी का पहला दिन था...'' छोटुभाई इन्जीनियर के रुप में अपने प्रारंभिक कार्यकाल के दिनों के बारे में बात कर रहे हैं : ''पहली मार्च को साबरमती सर्कल में जोईन किया, दूसरी मार्च को नडियाद डिविजन में पोस्टिंग मिला और तीसरी मार्च को मैं आणंद आ गया । उस समय गुजरात विद्युत बोर्ड में ट्रान्समिशन के ६६ के.वी. सबस्टेशन थे । साबरमती, नडियाद, आणंद, उतराण, वडोदरा वगैरह बड़े सबस्टेशन गिने जाते थे । मुझे आणंद में काम करने का मौका मिला । तत्कालीन सुप्रिन्टेन्डींग इन्जिनीयर ने मुझे अतिरिक्त जिम्मेदारी भी सौंपी थी । उस समय एच.एम.

पटेल ने विद्यानगर में उद्योगों का विकास करने के उद्देश्य से करीब ९५ बड़े उद्योगपतियों को बुलाया था । उन दिनों उद्योगो के लिए पावर की कमी थी । रात को दस बजे से सुबह सात बजे तक ही पावर मिलता था । दिन का पावर भी मिले उसके लिए डिजल जनरेटिंग पावर स्टेशन की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई । मैं रोज सायकिल लेकर आता था । सुबह सात बज़े से रात के दस बज़े तक डीजल पावर स्टेशन चलाता था ।''

छोटुभाई गुजरात इलेक्ट्रिक बोर्ड के साथ जुड़े तब से ही लोगों की सेवा करने की भावना उनके मन में थी । जो जिम्मेदारी संभालनी थी उसमें सबसे पहली बात यह थी कि बिजली के बेचने की जो व्यवस्था है आप उसमें जुड़े हैं । इसलिए जो आयेगा वह हमारा ग्राहक है। इस प्रकार ग्राहक को संपूर्ण संतोष हों ऐसा काम करने की तमन्ना थी । लेकिन कहावत है ना कि... अच्छे काम में हजार विघ्न आते हैं... जब कोई सरकारी नौकरी कर रहा हों और अपने काम को ईमानदारी से करना चाहता हों तो वरिष्ठ अधिकारी और लोग रास्ते में रोड़ा डालते हैं । छोटुभाई के रास्ते में भी अनेक अड़चने आई थीं. लेकिन विपरीत

परिस्थितियों में भी जो कदम आगे बढ़ाया है उससे पीछे न हटने का छोटुभाई का दृढ संकल्प था । इसी संकल्प के साथ आगे बढ़ने का नैतिक बल उन्हें सोक्रेटिस और रोमा रोलां के वाक्यों से मिला । वे वाक्य इस प्रकार थे :

> ''हमारे बारे में लोग क्या कहेंगे उसकी फिकर न करो । लेकिन वह अकेला मनुष्य जिसे न्याय अन्याय की समझ है वह क्या कहेगा उसके बारे में सोचो.'' **– सोक्रेटिस**
>
> ''मैंने बारबार कहा है कि दुनिया जो खराब से खराब दूषणों से त्रस्त है उसका असली कारण दुष्टों की ताकत नहीं है लेकिन सज्जनों की कमजोरी है और यह कमजोरी उनमें इच्छाशक्ति की कमी, स्वतंत्रता से अपनी बात कहने का भय और नीतिगत विषयों में लचीलेपन के कारण हैं ।'' **– रोमा रोलां**

चारुतर विद्यामंडल के मुख्यालय में अध्यक्ष की चेम्बर में जहाँ डॉ. सी.एल. पटेल बैठते हैं वहाँ आज भी बांयी तरफ की दीवार पर फ्रेम में ये वाक्य चेम्बर की शोभा बढाते हैं । डॉ. पटेल बताते हैं : ''१९६१ में जब गुजरात विद्युत बोर्ड मैंने जोईन किया तबसे ये वाक्य मैंने अपने साथ रखे हैं । ये वाक्य किसी ने मुझे दिये नहीं थे लेकिन मैंने स्वयं ही इन्हें कहीं से पाया था ।''

ये वाक्य छोटुभाई के जीवन के सिद्धांत बन गये । इन्हीं सिद्धांतो के साथ उन्होंने संपूर्ण निष्ठा से अपनी जिम्मेदारियाँ निभाई । छोटुभाई ने ही गुजरात विद्युत से चोरी करने वाले अनेक बिजली चोरों को पकड़वाया था ।

''गांव में तो आपमें हिम्मत हों तभी किसी बिजली चोर को पकड़ सकते हो...।'' छोटुभाई यह बता रहे थे तभी उन्हें एक किस्सा याद आया :

‘‘बोरसद तहसील का एक गाँव था उसमें दो उस्ताद थे । एक पटेल और दूसरा क्षत्रिय । क्षत्रिय तहसीलदार था । दोनों ने तीन साल से बिजली का बिलका भुगतान नहीं किया था । लेकिन उनके कुएं चल रहे थे । इसलिए एक दिन मैं वहां गया । जीप एक किलोमीटर के फासले पर खड़ी करके चलकर वहां गया । गर्मियों के दिन थे । उन दिनों मैं अपने साथ चाकू रखता था । आम के पेड़ से आम तोड़कर छीलता-छीलता मैं तहसीलदार के पास गया । फिर कहा,

‘‘तहसीलदार साहब का यहीं कुआं है क्या?’’

‘‘हां, यही हैं, लेकिन आप कौन ?’’

‘‘मैं खंभोळज से आ रहा हूँ । मैंने इलेक्ट्रिक बोर्ड का कनेक्शन लिया है । उन्होंने मुझे नोटिस भेजा है कि तीन महीने में कनेक्शन ले लो वरना मिनिमम बिल भरना पड़ेगा । मैंने बोरसद के ऑफिस में पूछताछ की तो पता चला कि आपके गांव में दो जगह ऐसी है जहाँ कनेक्शन कट गया है । आपके पास ज्योति की मोटर है, मुझे भी यही मोटर लेना है । इसलिए आपके पास आया हूँ ।’’

‘‘तो आप, खंभोळज से आये हैं ?’’

‘‘हां, मुझे मोटर खरीदना है ।’’

‘‘देखो, सामने क्या दिख रहा है ?’’

‘‘आप क्या दिखा रहे हैं ?’’

‘‘सामने पानी चल रहा है, वही कुआं है ।’’

‘‘आप स्टार्टर कौन सा इस्तेमाल करते हो, जरा वह तो बताओ ।’’

तहसीलदार ने सब कुछ बताया। छोटुभाई ने देखा कि वह चोरी करता था लेकिन मीटर सही चलता था, लेकिन कोई वहां जाने की हिम्मत नहीं करता था। सब कुछ देख लेने के बाद छोटुभाई ने कहा : ''अब पटेल डाह्याभाई के यहाँ जाता हूँ। शायद उन्हें अपना मोटर बेचना हो तो...''

''वहां मत जाना। वहां भी इसी प्रकार है।''

लेकिन छोटुभाई उस पटेल के वहाँ गये। वहाँ भी मामला यही था। बिल के जो पैसे वह बचाता था उससे अपना मकान बना रहा था। यह सब कुछ अपनी आंखों से देख लेने के पश्चात् छोटुभाई वापस आ गये। जीप में बैठे और थोड़ी देर में ही इन दोनों के यहां छापा मारा। पटेल और क्षत्रिय तो भौचक्के रह गये।

''आज, आप ही यहां आये थे ना ?''

''नहीं भाई, मैं तो पहली बार आया हूँ।''

''नहीं. आप ही थे,'' पटेल बोला : ''मोटर लेने आप ही आये थे।''

''मैंने दोनों के मीटर की रीडींग ले ली थी... ''छोटुभाई इस मजेदार किस्से की बात आगे बढ़ाते हुए कहते हैं :''उस समय यानि १९६५ में इन दोनों का बिल ११-१२ हजार रुपये था। मैंने क्षत्रिय से कहा : ''अब क्या करोगे ? जाना है तहसीलदार साहब को जेल में ? और फिर पटेल से कहा : ''आपको मकान बनाना हों तो जरुर बनाना लेकिन इन पैसों से नहीं बनेगा।'' बस, फिर दोनों ने बिल का भुगतान कर दिया।

ऐसी अनेक घटनाओं के बाद बिजली चोरों में छोटुभाई का डर बैठ गया

था । वे छोटुभाई को सबक सिखाने की तरकीब भी सोचने लगे । तभी एक बिजली चोर ने छोटुभाई के सामने अपनी इच्छा कुछ इस प्रकार व्यक्त की थी । छोटुभाई उस घटना को याद करते हुए बताते हैं : ''बात गाना की है । उस समय मैं स्कूटर रखता था । दाढ़ी भी थी । सिंगल फेज मिलने के कारण एक शिकायत आयी थी, इसलिए मैं गया । सभी लाईने चेक करवाई । ट्रान्सफोर्मर और कनेक्शन चेक किया । तभी शिकायत करने वाले चाचा ने कहा : ''उस सी.एल. पटेल को जरा यहां भेजना... मैं उसे रस्सी से बांधकर कुएँ में लटकाना चाहता हूँ ।''

''चाचा, आप उसे कुएं में नहीं लटका सकते ।''

''आप जरा उसे भेजना तो सही, हम उसे समझा देंगे ।''

यह संवाद चल रहा था उसके साथ छोटुभाई ने कनेक्शन, स्टार्टर और बाकी सभी कुछ चेक कर लिया । उन्हें पता चल गया कि चाचा भी बिजली की चोरी करते हैं । फिर छोटुभाई वापस गये और जीप में आये । चाचा से कहा : ''आप जिस सी.एल. पटेल की बात कर रहे थे वह मैं स्वयं हूँ... आप तो मुझे नहीं लटका पाओगे । लेकिन मैं आपको जरुर लटकाऊँगा... साढ़े तीन रुपयों का स्टेम्प पेपर लाओ और उस पर चोरी कबूल करो । फिर बिल का भुगतान कर दो ।''

''आपने हमें फँसाया...'' ऐसा बोलकर चाचा ने छोटुभाई के बताये अनुसार बिजली का बिल चुकता कर दिया । आज इसी चाचा के वारिसों ने न्यू विद्यानगर के शिक्षासंकुल लिए हमें जमीन दी है ।

गुजरात विद्युत बोर्ड में रहकर बिजली की चोरी पकड़ने के ऐसे तो अनेक साहस छोटुभाई ने किये हैं । लोग बिजली की चोरी करें इस बात से उन्हें बहुत नफरत है । अनेक ग्राहकों को चोरी करते हुए पकड़ा, असामाजिक तत्त्वों को भी उन्होंने सही राह दिखाई । इसलिए स्वाभाविक है कि कई लोग अनजाने में ही उनके दुश्मन बन गये । वे बदला लेने का मौका ढूंढने लगे । छोटुभाई नाम के कांटे को रास्ते से साफ करने के लिए षड्यंत्र रचने लगे ।

''हमारे गांव में ग्राम पंचायत के चुनाव में दो पक्ष बन गये थे, जिस कारण मेरा खून करने के अनेक बार प्रयत्न किये गए हैं...'' छोटुभाई बता रहे थे: ''गांव के विरोधी पक्ष मुझ से बदला लेने के चक्कर में मुझे मार ही डालने की फिराक में था, उन्होंने अनेक बार प्रयत्न भी किये । मैं चिखोदरा चौराहे के पास से दिन में चार बार गुजरता था, वहां मेरे पर हमले किये गये हैं। एक बार तो पब्लिक में से किसी ने सामने वाले के हाथ से रिवॉल्वर छीन ली थी । मुझ से बदला लेने वालों ने मेरे परिवार के लोगों को भी मारा है । एक बार मेरे पिताजी को मारा था, उनकी दवा करवा के मैं घर आया तब मुझे बहुत गुस्सा आया था, मन में आया कि दो-चार को मार गिराऊं... मेरे पास बेल्जियम की बंदूक थी, उसमें कारतूस भरकर बाहर निकल ही रहा था कि तब मेरे पिताजी ने कहा था - ''सौ सौ ना पापे मरशे'' अर्थात् सब अपनी करनी भोगेंगे... उस समय मेरा बड़ा बेटा केवल सवा साल का था । उसे सामने मैंने देखा और सोचा कि यदि आज मैं उन लोगों को मारुंगा, कल वे फिर मुझे मारेंगे... इस प्रकार चक्कर चलता ही रहेगा । यही सोचकर मैंने अपनी बंदूक आणंद के पुलिस स्टेशन में जमा करवा दी । यह घटना १९६८ की थी... मेरे पिताजी ने जो शब्द कहे थे

कालक्रम में वे सच साबित हुए । मेरा खून करने का प्रयत्न करने वालों में से तीन व्यक्ति की आकस्मिक में मौत हो गई । मुझे भी लगा कि जिस चीज मन में खराब विचार आते हों उसे घर में नहीं रखना चाहिए । मैंने अपना पिस्तौल ही किसी को बेच दिया ।''

इस घटना के बाद छोटुभाई ने कभी भी किसी के बारे में बुरा नहीं सोचा है, क्योंकि पहले भी उन्होंने कभी किसी का बुरा नहीं चाहा था । उनके मन में पहले से ही लोकसेवा की भावना थी । ग्राहकों का संतोष ही उनका मुद्रा लेख था । उनकी कार्यनिष्ठा और कार्यकुशलता के कारण उन्हें १९६६ में राजकोट में प्रमोशन मिला था, इसलिए वे राजकोट गये ।

''भारत का सबसे बड़ा डीजल पावर स्टेशन राजकोट में था... छोटुभाई फिर से अपने अतीत में खो जाते हैं : ''उस समय धुवारण गांव का पावर स्टेशन जो खराब होता तभी केवल राजकोट का पावर स्टेशन चलाना पड़ता, बाकी तो धुवारण का पावर स्टेशन ही चलता था । इसलिए फालतू समय में मैं राउन्ड में निलकता तब देखता कि इन्जीनियर और कर्मचारी गप्पे मारते या फिर सोते रहते । उन्हें देख मुझे लगा कि ये लोग तनख्वाह तो लेते हैं इसलिए इन्हें भी कुछ काम सौंपना चाहिए । डॉ. वर्गीस कुरियन जी.ई.बी. के चेरमेन थे तब की बात है । तब तीन सौ ट्रान्सफोर्मर रिपेर करना सीखा दिया । एक भी पैसा खर्च किये बिना सारे ट्रान्सफोर्मर रिपेर हो गये थे । मैंने राजकोट में ऐसा प्रबन्ध किया था। कि यदि कोई अपने घर में बिजली केद कनेक्शन के लिए अप्लाय करें तो केवल १५ दिनों के अंदर ही उसके घर में बिजली का कनेक्शन मिल जाता था और यदि कोई उद्योग के लिए अप्लाय करे तो एक महीने में उसे बिजली का

कनेक्शन मिल जाता था।''

छोटुभाई राजकोट के एक अन्य संस्मरण को याद करते हुए बताते हैं : ''मेरा पोस्टिंग राजकोट में हुआ था तब आठ रुपये किलो घी मिलता था और सवा रुपये किलो तेल मिलता था... हमें फर्स्ट क्लास का रेल टिकट मिलता था। लेकिन मैं परिवार के साथ थर्ड क्लास में गया । आणंद से विरमगाम गये । वहां से सौराष्ट्र की जो ट्रेन पकड़नी थी उसमें बैठे । साथ में दो-चार बोरी भरकर जरुरी बर्तन थे । अन्य सामान लाना अभी बाकी था । उस समय साधुसिंह नामक कोन्ट्रेक्टर राजकोट काम से आया जाया करता था । इसलिए वह धीरे-धीरे मेरा बाकी का सामान लेकर आया था । मेरे हेड क्लार्क ने टी ए डी ए का ३०० रुपयों का बिल बना दिया । मैंने भी पैसे ले लिये ।''

थोड़े दिनों पश्चात, एक दिन छोटुभाई की पत्नी शारदा बहन ने कहा : ''हमारे यहाँ जो कामवाली बाई आती है वह अच्छा काम कर रही है ।'' तब छोटुभाई ने कहा था कि - ''हम अनजान प्रदेश में आकर बसे हैं इसलिए तुम जरा संभलकर रहना ।''

इस बातचीत के थोड़े दिनों बाद ही मेरी पत्नी ने कहा : ''हमारी घड़ी चोरी हो गई...'' छोटुभाई बात को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि : ''तब मैंने कहा कि हमारा सामान तो साधुसिंह लेकर आया था । लेकिन फिर भी हमने तीन सौ रुपये ले लिए थे । इसलिए वह हिसाब बराबर हो गया । अब घड़ी गई तो कोई अफसोस करना नहीं ।''

इस घटना में छोटुभाई के पारदर्शक व्यक्तित्व की झलक मिलती है । स्वयं

ने एक समय गलत काम किया था। उसका स्वीकार करते हुए वे जरा भी संकोच अनुभव नहीं कर रहे थे । इसी प्रकार के शुद्ध आचार-विचार और मन की पवित्रता के कारण ही उन्हें लोगों का अपार प्रेम मिला । मार्ग से भटके हुए कितने ही लोगों को वे सही रास्ते पर लेकर आये । वे हमेशा अपने साथियों से कहते कि दो हाथ वाले के पास कभी भी

छोटुभाई और शारदाबहन

भीख न मांगो । भगवान हजार हाथ वाला है उससे मांगो... छोटुभाई की इस अमूल्य सलाह पर अमल करने से कई लोग शैतान से साधु बन गये । लेकिन जो फिर भी रिश्वत या फिरौती लेना चाहते थे वे छोटुभाई को धिक्कारते थे, साथ ही बिजली की चोरी करने वालों की भी आंखों वे खटकते थे । ऐसे समाज विरोधी कार्य करने वाले तत्व छोटुभाई को परेशान करने का एक भी मौका अपने हाथ से गँवाते नहीं थे । फिर भी उनका कुछ काम नहीं होता हों वे राजनीतिक दबाव लाकर छोटुभाई का तबादला (ट्रांसफर) करवा देते । छोटुभाई बताते हैं : ''मेरी २० वर्षो की नौकरी में २० बार मेरा तबादला हुआ था ।''

तबादले से छोटुभाई को याद आया कि : ''उन दिनों शांतिकुमार राजा जी.ई.बी के चेरमेन थे । गुजरात विद्युत बोर्ड को कैसे अधिक लाभ पहुँच सकता है इस बारे में उन्होंने सुझाव मँगवाये थे । मैंने ट्रान्सफोर्मर मेइन्टेनन्स और बिजली चोरी रोकने के बारे में सुझाव भेजा था । उन्होंने मुझे बधाई दी थी

। मैंने कई बिजली चोरों को पकड़ा था । इसलिए राजनीतिक दबाव से मेरा तबादला करवा दिया गया । तब मैं जीप में पेटलाद जा रहा था... सामने से दूसरा जीप आया, हमें रोका और सामने वाले जीप से उतरे एक अधिकारी ने मुझे कहा, माफ करना साहब, आपके तबादले का ऑर्डर लाया हूँ... मैंने ऑर्डर देखा तो पता चला कि मेरा तबादला कोयली रिफाइनरी में कर दिया गया था ।''

उस समय चीफ इन्जीनियर डी.एम. पटेल थे । उन्हें छोटुभाई ने कहा : ''मैंने गुजरात विद्युत बोर्ड का क्या बिगाड़ा है, कि मेरा तबादला कोयली में करवा दिया गया ? आप मुझे हेड ऑफिस में रखवा दीजिये ।'' बाद में छोटुभाई को वडोदरा हेड ओफिस में पोस्टिंग दिया गया, इसलिए परिवार के साथ वे वडोदरा शिफ्ट हो गये । यहां उन्हें आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा था । छोटुभाई के शब्दों में ही उस घटना का उल्लेख प्रस्तुत है :

''मैंने नौकरी करना शुरु किया तभी से संकल्प लिया था कि अब पिताजी से एक भी पैसा नहीं माँगूगा । अपनी ही तनख्वाह से गुजारा करुंगा । लेकिन एक दिन मेरी पत्नी बीमार पड़ी । दिन-प्रतिदिन उसकी बीमारी बढ़ती गई । उन दिनों गुजरात फर्टिलाईजर में स्कूटर खरीदने के लिए लोन मिलता था । मेरे पास स्कूटर था । मेरे पिताजी ने १९६३में मुझे दिलवाया था । स्कूटर ७५ हजार कि.मी. घूमा था । लेकिन फिर भी मैंने उसे अप-टु-डेट रखा था । मेरे एक दोस्त को स्कूटर चाहिये था । इसलिए २९०० में खरीदा हुआ स्कूटर मैंने ३६०० में बेच दिया । लेकिन वह पैसा भी मैंने अपने पिताजी को दे दिया था जबकि मेरे घर में पत्नी के इंजेक्शन के पैसे भी न थे । मेरी चार बेटियां और दो बेटे हैं ।

उनकी पढ़ाई का खर्चा । बड़ी बेटी तब नौवीं क्लास में थी । पत्नी बीमार । मैंने अपनी जिंदगी में कभी भी रसोई में काम नहीं किया था । लेकिन परिस्थितियों ने वह भी सीखा दिया । पत्नी को पूछ-पूछकर खाना बनाता था । लेकिन पैसे कहां से लाता... दवा लाने के लिए पैसा तो चाहिए । अंतः आणंद के जयकृष्ण श्रोफ के पास से पांच हजार रुपये ब्याज पर लिये । उससे दवा करायी । लेकिन तीन प्रतिशत ब्याज एडवान्स में कट जाता और यदि समय पर पैसे का भुगतान नहीं करने पर डिफोल्टर गिने जाते । मैं समय से पैसा तो भरना चाहता था लेकिन कहां से लाता । श्रोफ ने कहा आप कहीं से भी पैसा भरने का जुगाढ़ करो । फिर मैंने पी एफ में से पैसा उठाकर लोन लेकर ब्याज के साथ पांच हजार रुपये भरे थे। फिर से मैंने श्रोफ से पैसे उधार मांगे तो उन्होंने दो टूक का जवाब देते हुए कहा था कि पहली बार आप समय से पैसा नहीं भर पाये थे । इसलिए आपकी गिनती अब डिफोल्टर के रुप में हो गई है । फलस्वरुप अब आपको पैसा उधार नहीं दिया जायेगा... इस प्रकार मैं डिफोल्टर बना था ।''

फिर छोटुभाई ने पैसा जोड़ना शुरु किया । उस समय डॉक्टर इंजेक्शन के आठ आने लेता था । आठ आने बचाने के लिए छोटुभाई चलकर जाते थे । कारेली बाग को पार करके दूर आये स्टेशन से बस पकड़ते । लौटते वक्त भी कमाटीबाग पार करके कारेली बाग आते । इस प्रकार रोज पैदल जाते-आते । छोटुभाई बताते हैं कि - ''एक दिन मैं चलकर आ रहा था तब बाहर चौक में बैठी हुई कुछ महिलाएं बातें कर रही थी कि वो पंद्रह नंबर वाली औरत अब ज्यादा दिन जीवित नहीं रहेगी... यह सुनकर मुझे लगा कि मेरी पत्नी को कुछ गंभीर बीमारी है । तुरंत उसे आणंद के डॉ. उमेदभाई के दवाखाने ले जाना

पड़ेगा । वहाँ जाने के लिए टैक्सी करनी पड़ेगी, मैं टैक्सी स्टेन्ड पर गया और पूछा कि आणंद जाने के कितने पैसे लोगे ? जवाब मिला : तीस रुपये, तब मेरे पास केवल तीस रुपये ही थे फिर भी टेक्सी में अपनी पत्नी को लेकर आणंद उमेदभाई के दवाखाने पहुंचा । उमेदभाई ने पत्नी की देखभाल शुरु कर दी । कई बोतलें चढ़ाई । दो-तीन दिन में तो मेरी पत्नी अच्छी भली हो गई । मैंने उमेदभाई से कहा मेरी पत्नी दो-तीन महीने से बीमार थी आपने उसे कौन सी घुट्टी पिला दी कि वह दो तीन-दिन में ही ठीक हो गई ? खैर, मैंने सोचा कि तनख्वाह मिलेगी तब उनकी फीस भर दूंगा और फिर ट्रेन में अपनी पत्नी के साथ घर आया । लेकिन उमेदभाई ने कहा कि हम दोस्त हैं । तुम्हारे पास से मैं थोड़े ही दवा के पैसे ले सकता हूँ । इसलिए बात वहीं पर समाप्त हो गई ।''

उस समय तो बात समाप्त हो गई थी, लेकिन आज से दस साल पहले छोटुभाई अमरीका में उमेदभाई से मिले तब यह प्रसंग दोनों को याद आ गया था । उस संदर्भ में वे बताते हैं कि-''उमेदभाई का बेटा निलेश अमरीका में है । प्रमुखस्वामी जी का ऑपरेशन करना था तब डॉ. सुब्रह्मण्यम के साथ डॉ. निलेश भी थे । मैं दस साल पहले अमरीका गया तब निलेश के घर उमेदभाई की तबियत पूछने गया था । उस समय बात में से बात निकली और मैंने कहा कि आपने मेरी पत्नी की तबियत ठीक कर दी थी तब मेरे पास पैसे भी नहीं थे । आप यदि पैसे मांगते तो भी मैं अपनी तनख्वाह आपके सामने धर देता । लेकिन आपने फीस न लेकर मेरे ऊपर तब बहुत बड़ा उपकार किया था । तब उमेदभाई बोले कि - उपकार तो तुम्हारा मेरे ऊपर था । उन दिनों ग्रीड़वाले मुझे परेशान करते थे इसलिए मैंने आपके पिताजी को फोन करके कहा था कि

छोटुभाई का नंबर देना जरा, यह ग्रीड़वाले मुझे परेशान कर रहे हैं... यह सुनकर आपके पिताजी मेरे घर आये थे । उन्होंने फोन लगाया और ग्रीड़वाले को बोला कि, मैं सी.एल. पटेल का पिताजी बोल रहा हूँ । यह उमेदभाई का क्या किस्सा है ? तब ग्रीड़वाले ने कहा था, आप साहब को बताना मत । अब हम कुछ नहीं करेंगे... आपके पिताजी के फोन से ग्रीड़वालों ने मुझे तंग करना छोड़ दिया था... इस प्रकार सालों बाद उस बात का खुलासा हुआ था ।

गुजरात विद्युत बोर्ड में छोटुभाई के नाम का डंका बजता था, यह बात उस घटना से साबित होती है । निष्ठा और नीतिमत्ता के कारण विद्युत बोर्ड में तथा लोगों के वे चहेते बन गये थे । उन दिनों छोटुभाई इन्जीनियरींग एसोसियेशन के अग्रणी थे । उस दिन जी ई बी के चेरमेन शांतिकुमार राजा ने उन्हें बुलाया और कहा कि :

''मिस्टर पटेल, आप अपने मन में क्या समझते हैं ?''

''कुछ नहीं समझता साहब...''

''आपने यह सब क्या कर रखा है ?''

''कुछ भी तो नहीं ।''

''आप, यह सब कर रहे हो, फिर बुरे बनोगे ।''

''सर, जिंदगी में मैंने खराब होने जैसा कोई भी काम नहीं किया है । लेकिन आप यह सब बात जाने दो और मुझे बताइये कि आपने मुझे क्यों बुलाया है ।''

''मैं बताऊँ वह काम आप करोंगे कि नहीं ?''

''आप कहोंगे तो करूंगा, लेकिन सिद्धांत के विरुद्ध जाकर नहीं ।''

''ऑल राईट, यू केन गो ।''

शाम को करीब सवा पांच बजे यह बातचीत होने के पश्चात छोटुभाई जब अपने ऑफिस आये तो उनके टेबल पर ट्रांसफर का ऑर्डर पड़ा था । उनका तबादला कंडला कर दिया गया था । ऑर्डर देखकर वे चेरमेन के साथ झगड़ने हेतु वापस गये लेकिन वे तब वहां से निकल चुके थे । छोटुभाई मुँह लटकाकर वापस आ गये । लेकिन उन्होंने पक्का इरादा कर लिया कि वे किसी भी हालात में कंडला में हाजिर नहीं होंगे ।

छोटुभाई अपने निर्णय पर अडिग रहे । कंडला नहीं गये और दस महीने तक घर पर ही बैठे रहे । समय काल दौरान शांतिकुमार राजा ने शांति से सोच-विचार किया होगा और उन्हें लगा कि यह सज्जन आदमी लगता है । इसलिए उन्होंने छोटुभाई को दस महीने की तनख्वाह भी दी और उनका ट्रांसफर नडियाद कर दिया । छोटुभाई फिर से काम पर लग गये । फिर प्रमोशन की बारी आई तब उनकी क्वॉलिफिकेशन ने रोड़ा डाला । छोटुभाई ने इलेक्ट्रिकल इन्जीनियर के रुप में काम किया था जबकि उन्होंने डिग्री मिकेनिकल इन्जीनियरिंग में ली थी । यह मुद्दा पकड़कर टेकनिकल मेम्बर मिस्टर मंकोडी ने उनका ट्रांसफर धुवारण में कर दिया । तब छोटुभाई ने बिनती की कि - ''मेरे बच्चे पढ़ते हैं इसलिए मुझे वहां न भेंजे ।''

''देखो, तुम्हें अगर नौकरी करनी हों तो धुवारण तो जाना ही पड़ेगा....'' मिस्टर मकोडी के इस व्यवहार को देखकर छोटुभाई के पास

धुवारण जाने के अलावा दूसरा कोई मार्ग न था। मिस्टर मंकोडी उन्हें सजा देना चाहते थे यह बात छोटुभाई अच्छी प्रकार जानते थे। छोटुभाई महीने में एकाध बार राउन्ड मारने स्वयं धुवारण अपनी फियाट लेकर जाते थे, लेकिन धीरे-धीरे वह भी बंद कर दिया। फिर जो होना था वही हुआ। छोटुभाई की नौकरी टर्मिनेट हुई। ऑफिशियल टर्मिशेनश दो साल बाद हुआ। इस प्रकार ४५ वर्ष की उमर में नौकरी छौड़नेका अवसर आया।

छोटुभाई की नौकरी गयीं लेकिन लोगों का प्रेम और आदर उनके साथ था। गुजरात विद्युत बोर्ड में जो काम किया उसके कारण अधिकारियों से लेकर उनके हाथ के नीचे काम करने वाले सभी कर्मचारी और प्रजा का प्रेम उन्हें खूब मिला। इसी कारण नडियाद के लोग उन्हें एमएलए बनाना चाहते थे। उस घटना को याद करते हुए छोटुभाई बताते हैं कि - ''नडियाद जो महुधा बेल्ट पर है, वह बरसाती पानी पर आधारित हैं। मैंने उस विस्तार में बहुत से लोगों के बहुत काम किये हैं। एक दिन वे लोग मेरे पास आये और बोले कि - आप नौकरी छोड़ दो, हम आपको एमएलए बनाना चाहते हैं। लेकिन मैं एमएलए बनने नहीं आया हूँ, ऐसा बोलकर मैंने उनकी बात टाल दी।''

छोटुभाई ने एमएलए बनने के लिए मना कर दिया था फिर उनके सामने सांसद बनने का प्रस्ताव आया। गुजरात के भूतपूर्व मुख्यमंत्री स्व. चीमनभाई पटेल छोटुभाई को संसद सदस्य बनाने के लिए उत्सुक थे, लेकिन उस प्रस्ताव का भी छोटुभाई ने सविनय अस्वीकार कर दिया। वे बताते हैं कि - ''यदि मैं सत्ता पक्ष में होता तो जरुर कुछ कार्य करने का अवसर मिला होता।''

छोटुभाई सत्ता पक्ष में भले न हों लेकिन फिर भी काम करने के अनेक

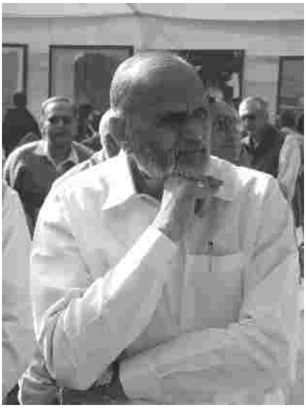

अवसर उन्हें मिले और उन्होंने उन्हें बखूबी निभाया भी । बात है महागुजरात आंदोलन की । इस आंदोलन में छोटुभाई ने सक्रिय रुप से भाग लिया था । इस संदर्भ में छोटुभाई बताते हैं कि - ''उन दिनों महागुजरात आंदोलन की लहर बड़ी तेज चल रही थी । विद्यानगर में भी बड़ी-बड़ी सभाएं होती थीं । ब्रह्मकुमार भट्ट, हरिहर खंभोळजा और अन्य महानुभाव सभाओं का आयोजन करते थे । मैं तब युवक कोंग्रेस में था । इन सभाओं में उपस्थित रहता था । एक दिन अहमदाबाद में कांकरिया पर पंडित जवाहरलाल नेहरु की सभा थी । मैं उस सभा में हाजर होने उपस्थित निकला । लेकिन कांकरिया के बज़ाय लॉ-गार्डन पहुंच गया । तब वहां (लॉ-गार्डन) इन्दुलाल याज्ञिक की सभा चल रही थी । जवाहरलाल देश के प्रधानमंत्री थे, लेकिन उनकी सभा फीकी पड़ जाये उतनी प्रजा इन्दुलाल की सभा में थी । यदि गुजरात अलग नहीं होगा तो कितना अन्याय सहन करना पड़ेगा उस विषय पर इन्दुलाल याज्ञिक जोरदार भाषण कर रहे थे... इस महागुजरात आंदोलन से यदि गुजरात अलग हों तो उसे क्या-क्या लाभ होंगे उसका गांव-गांव जाकर प्रचार करने की जिम्मेदारी मेरी थीं । हमारी एक टुकड़ी थी । हम ट्रेन में जाते । जिस गांव में जाना हों वहाँ से ट्रेन पास होती तब हम ट्रेन की चेन खींचकर उतर जाते। इस प्रकार करमसद से खंभात तक के सभी गांवों में घूम चुका हूँ और महागुजरात के आंदोलन में एक सैनिक के रुप में

जो काम करना था उसे मैंने बखूबी निभाया था...!''

छोटुभाई ने सैनिक के रुप में काम किया, लेकिन उनकी किस्मत में सेनापति बनना लिखा था । इसलिए आज वे गुजरात के सबसे बड़े शिक्षा संस्थान चारुतर विद्यामंडल का सफलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं । शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने नये नीति-नियमों को अपनाते हुए उसे एक नई दिशा प्रदान की है । उन्होंने अनेक नये कोर्स लागू किये । वैसे चारुतर विद्यामंडल में अध्यक्ष का कार्यभार संभालने से पहले छोटुभाई ने सामाजिक क्षेत्र में भी अपने ही ढंग से काम करके अपनी एक अलग पहचान कायम की थी । मसलन गुजरात विद्युत बोर्ड की नौकरी छोड़ने के बाद पाटीदार समाज को उन्होंने नई राह दिखाई थी । वणसोल सत्ताईस पाटीदार समाज को जाग्रत करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था । उन्होंने दहेज प्रथा का विरोध किया । पाटीदार समाज के लोग शादी में कम खर्च करें इस बात की उन्हें सलाह दी । शत प्रतिशत खर्च देकर समूह शादी के दो समारोह का भी आयोजन किया था ।

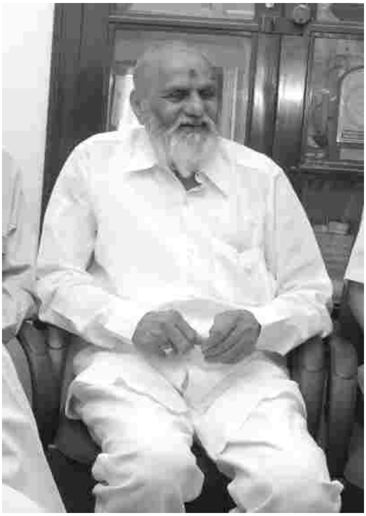

उन दिनों छोटुभाई सामाजिक कार्य करते । खेती करते, रियल एस्टेट का व्यवसाय भी करते । रियल एस्टेट में उन्होंने खूब धन कमाया लेकिन उसके पहले के दिन उन्होंने आर्थिक संघर्ष में बिताये थे । उस समय को याद करते हुए छोटुभाई बताते हैं कि : ''मेरी

सौतेली माँ की बेटी बच्चे को जन्म देने के बाद दो दिन में ही स्वर्ग सिधार गई थी। फिर मेरी माँ ने उस बच्चे को पाल-पोसकर बड़ा किया, पढ़ाया-लिखाया । मैंने उसे खेतीबाड़ी और अन्य जिम्मेदारियाँ भी सौंपी लेकिन उसने सभी कुछ साफ कर डाला । मेरे पिताजी की भी जो बचत थी उस पर भी हाथ साफ कर डाला । फलस्वरुप एक दिन ऐसा आया कि मुझे खेती करने और अन्य व्यवहार निपटाने के लिए मंडली से २५ हजार रुपये का लोन लेना पड़ा । खेतीबाड़ी से जो कमाई होती उससे लोन का भुगतानभर देता और फिर से खेती करने के लिए नया लोन ले लेता । इस प्रकार पांच साल तक मैंने लोन लेकर उसका टर्नओवर करता रहता ।''

छोटुभाई के लिए वे दिन बहुत ही संघर्षमय थे । लेकिन संघर्ष से हार न माननेवाले छोटुभाई ने स्वयं आगे का रास्ता ढूंढ निकाला । उन्होंने कभी भी धूप-बारिश या ठंड की परवाह नहीं की... एक ही नियम सुबह साढ़े पांच बजे वे अपनी मोटर सायकल लेकर नडियाद से निकल पड़ते, खेत पर जाते खेत में खाद डालनी हों, पानी पिलाना हों या फसल काटने का काम हों तो उसे निपटाते । छोटुभाई किसी कारणवश यदि खेत पर न जा सकते तो उनकी पत्नी शारदा बहन खेत पर जातीं । एक आदमी की तीन बाजरे की रोटी के हिसाब से वे सभी मजदूरों के लिए २५० रोटियाँ या ढेबरा बनाती थीं जिसे लेकर छोटुभाई खेत पर जाते थे... इस प्रकार उन्होंने जी तोड़ मेहनत की है ।

पुरुषार्थ करने से भाग्य ने भी साथ दिया । वहीं भाग्य छोटुभाई को चारुतर विद्यामंडल तक ले आया । चारुतर विद्यामंडल के सहमंत्री मणिभाई आशाभाई पटेल का स्वर्गवास हो गया था । इसलिए उनकी कमी खलती थी । तब मंत्री

पद पर गोरधनभाई पटेल थे । वे खेतीबाड़ी में रिसर्च सायन्टीस्ट थे और छोटुभाई को पहचानते थे । एक दिन उन्होंने छोटुभाई के सामने प्रस्ताव रखा कि, ''आपने नौकरी छोड़ दी है तो क्या आप सेवा का काम करेंगे ?'' छोटुभाई ने काम करने की तैयारी दिखाई । फिर गोरधनभाई उन्हें चारुतर विद्यामंडल के अध्यक्ष एच.एम. पटेल के पास ले गये । उन्होंने छोटुभाई से कहा : ''वेल यु वॉन्ट टु सर्व... वी विल डिसाईड एन्ड कॉल यु...''

छोटुभाई वहां से निकल गये और गोरधनभाई से कहा : ''अब मैं जा रहा हूँ।''

''क्यों, क्या हुआ ?''

''छोटुभाई ने कहा, वे डिसाईड करेंगे और कॉल करेगें । लेकिन यदि मुझे काम करने देंगे तो मैं पूछ-पूछकर काम नहीं करुंगा । अपने हिसाब से काम करुंगा ।''

डॉ. एच.एम. पटेल

इस वार्तालाप के बाद गोरधनभाई ने पटेल साहब को कुछ कहा होगा । बाद में पटेल साहब ने छोटुभाई को एस्टेट मेनेजर बनाया । जिम्मेदारी संभालने के साथ ही छोटुभाई ने काम करना शुरु कर दिया । चारुतर विद्यामंडल की प्रोपर्टी का फेन्सिंग करवाया । उन दिनों शास्त्री मैदान में गधे घूमा करते थे और लोग गाड़ी चलाना भी वहां सीखते थे । छोटुभाई ने शास्त्री मैदान के चारों ओर कम्पाउन्ड दीवार बनाने की योजना तैयार की । तब भाई काका के बेटे

चीमनभाई ने कहा था कि : ''आप तो शास्त्री मैदान के आसपास के पेड़ कटवा डालोगे !''

छोटुभाई ने कहा: ''मैं किसान का बेटा हूँ, एक भी पेड़ नहीं कटने दूँगा।'' और वास्तव में उन्होंने एक भी पेड़ काटे बिना साढ़े तीन लाख के खर्च से शास्त्री मैदान की चारों ओर १७ एकड़ की कम्पाउन्ड वॉल बनवाई थी । चारुतर विद्यामंडल में यह उनका प्रथम उल्लेखनीय कार्य था ।

तत्पश्चात एच.एम. पटेल साहब ने छोटुभाई के हुनर को पहचान लिया था । उन्होंने छोटुभाई को सहमंत्री बनाया । छोटुभाई ने इस पद की गरिमा को भी बखूबी निभाया । बहुत सारे उल्लेखनीय कार्य किये जिसमें से एक यादगार वाकिया का ज़िक करते हुए वे बताते हैं : ''उन दिनों जामनगर की एक लड़की ने यहां एडमिशन लिया था, लेकिन उसे रहने के लिए होस्टल की सुविधा उपलब्ध न हो सकी । इसलिये लड़की ने अपने पिताजी को फोन लगाया ।

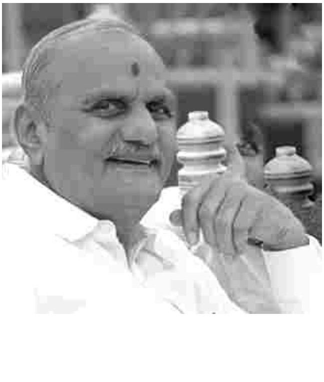

उसके पिता ने कहा तुम वहीं रहना मैं वहाँ आ रहा हूँ... वे वहां से निकले और रास्ते में ही उनका एक्सीडेन्ट हो गया । लेकिन अच्छी किस्मत से उन्हें ज्यादा चोट नहीं आई थी और वे दूसरी गाड़ी करके विद्यानगर पहुँचे थे । फिर मुझसे मिले और बेटी को होस्टल न मिलने की बात कही ।

फिर मैंने एच.एम. पटेल साहब से कहा कि हम सरदार पटेल युनिवर्सिटी के लेडीज होस्टल का उपयोग करते हैं । फिर भी होस्टल की सुविधा न होने के

कारण हमें करीब २५० लड़कियों को एडमिशन देने से मना करना पड़ता हैं, तो क्या हम एक लेडीज होस्टल नहीं बना सकते ?''

''होस्टल बनाने के लिए पैसा कहां से आयेगा ?''

''हम २५ लाख रुपयों का लोन ले लेते हैं ।''

''लोन कौन देगा ।''

''मैं व्यवस्था कर दूँगा....'' ऐसा कहकर छोटुभाई ने पैसे का इंतजाम कर लिया और ५८ लाख रुपयों के खर्च से २५० लड़कियां रह सकें वैसा होस्टल रसोई के साथ खड़ा कर दिया । फिर होस्टल से जो कमाई होती उससे लोन चुकता कर भर देते। इस प्रकार होस्टल बनाने का खर्चा भी निकल गया ।

लेडीज होस्टल बनाने के बाद छोटुभाई ने पोलिटेकनिक की जिम्मेदारी ली । उसके लिए ढाई करोड़ रुपये मिले थे । जो समय से काम पूरा हो जाय तो एक रुपया भी ज्यादा खर्च करने की जरुरत न थी । लेकिन यदि काम समय से पूरा न हो और लंबा चले तो २० प्रतिशत का खर्च बढ़ने की आशंका थी । इसलिए छोटुभाई ने एड़ी चोटी का जोर लगाकर काम नियत समयानुसार पूरा कर दिखाया ।

चारुतर विद्यामंडल के सहमंत्री के रुप में छोटुभाई ने ऐसे तो अनेक जिम्मेदारियों को निभाया है जिसमें गुंडों को भी सही रास्ते पर लाने का कार्य भी शामिल हैं । इस बात पर प्रकाश डालते हुए छोटुभाई बताते हैं :

''उन दिनों विद्यानगर में लारी-गल्लेवाले (छोटी सी केबिन में दुकान करनेवाले) और जिनके पास रहने की जगह न हों वे सभी होस्टल में अनाधिकृत

पोलीटेकनिक

रुप से रहते थे । गब्बरसिंह नामक एक गुंडा भी इसी प्रकार होस्टल में पड़ा रहता था । उसके प्रभाव से कॉलेज में एडमिशन भी मिल जाता था । पोलिटेकनिक में एक एडमिशन दिलाने के लिए उसने दो हजार रुपये लिये थे । उस समय मैं अपने पास हॉकी रखता था... एक दिन मैं गया और गब्बरसिंह को मारते-मारते मोटा बाजार से पोलिटेकनिक कॉलेज तक ले गया और उससे कहा कि दो हजार रुपये वापस कर दे... उसने पैसे लौटाये और वहां से जो रफूचक्कर हुआ कि फिर कभी भी उसकी शकल दिखाई न दी ।''

छोटुभाई ने इसी प्रकार अन्य गुंडों को भी पाठ चखाया था । रमेशभाई त्रिवेदी टी.वी. पटेल हाईस्कूल के प्रिन्सीपल थे तब की घटना है । एक दिन रमेशभाई छोटुभाई से मिले और बोले कि - ''हमारे कॉलेज में एक लड़का सीढ़ियों के पास खड़ा रहता है और लड़कियों को अड़ंगी लगाकर गिराता है, लेकिन वह करमसद का लड़का है इसलिए हम उसे कुछ कह नहीं सकते ।''

''आप चिंता मत करो, आज रिसेस में मैं वहां आऊंगा ।'' छोटुभाई ने कहा । नियत समय पर वे वहां पहुँचे । उन्होंने उस बदमाश को इतना पीटा कि वह वहां से दुम दबाकर भागा फिर भी छोटुभाई ने उसे छोड़ा नहीं और उसके

पीछे गाड़ी लेकर निकले । वह आगे और पीछे गाडी । अंत में छोटुभाई ने उसे धमकी दी कि फिर कभी यदि विद्यानगर में दिखा तो तुझे मार डालूंगा । बस फिर क्या था, उसे अपनी जान प्यारी थी और वह विद्यानगर का रास्ता ही भूल गया ।

छोटुभाई के इसी प्रकार के साहस और हिम्मत के कारण विद्याधाम विद्यानगर का वातावरण खिल उठा । चारों तरफ छोटुभाई के कार्यों की सुगंध फैलने लगी । समय के साथ-साथ १९९० में सरकार ने छोटुभाई को सीनेट का सदस्य बनाया । १९९१में सिन्डिकेट का चुनाव लड़े और बहुमत से जीते । अपने साथीदारों को भी उन्होंने जितवाया । उस अरसे में एक घटना घटी - छोटुभाई प्रमुखस्वामीजी के दर्शन करने गये थे । तत्कालीन शिक्षामंत्री करसनदास सोनेरी भी बापा के आशीर्वाद लेने आये थे । छोटुभाई और सोनेरी मिले, दोनों के बीच में वार्तालाप हुआ । सोनेरी ने कहा कि : ''सरदार पटेल युनिविर्सटी में जिसे कुलपति बनाना हो उनके नाम की सिफारिश एक सप्ताह में भेज देना ।''

छोटुभाई ने एच.एम. पटेल साहब को बात बताई । लेकिन वे बोले : ''मैं किसी के नाम की सिफारिश नहीं भेजूँगा...''

''सर, दिलावरसिंह जाडेजा को कुलपति बनना है, तो आप उनके नाम की सिफारिश भेज दीजिये...'' छोटुभाई ने कहा । एच.एम. पटेल ने सिफारिश भेजी । इस प्रकार सालों बाद सरदार पटेल यूनिवर्सिटी को चारुतर विद्यामंडल संचालित नलिनी कॉलेज के प्राचार्य को प्रथम कुलपति मिला ।

चारुतर विद्यामंडल संचालित नलिनी कॉलेज के प्राचार्य कुलपति के रुप में

छोटुभाई की पसंद थे जिससे उनका खुश होना स्वाभाविक था । लेकिन थोड़े ही दिनों पश्चात जो घटना घटीं उससे उनका मन खट्टा हो गया था। उस घटना के बारे में वे बताते हैं कि - ''मैं सिनेट का सदस्य था । तीन वर्ष बाद सिनेट के सभ्य के सदस्य का कालावधि समाप्त होता है इसलिए उसे फिर से सदस्य बनना पड़ता है ऐसा नियम है । लेकिन मंडल को लगा था कि मैं तो सिनेट का सदस्य हूँ ही, इसलिए मेरा नाम सरकार में भेजने से वे चूक गये । आप सिनेट के सदस्य न हों और सिन्डीकेट के सदस्य हों फिर भी आपको घर पर बैठना पड़ता है । मंडल ने मेरे लिये किसी भी प्रकार का प्रयास न किया । इसलिये मैंने ठान लिया कि जिसे हमारी परवाह ही न हों, किसी की कदर करना ही नहीं जानता, उस स्थान पर रहने से क्या फायदा...''

छोटुभाई ने अपने फैंसले पर अमल भी किया । चारुतर विद्यामंडल के कारोबार और अन्य होद्दों पर से इस्तीफा दे दिया । मन में ठान लिया कि अब इन लोगों के लिए वे कुछ भी काम नहीं करेंगे । इसी दरमियान सिन्डीकेट के चुनाव एलान हुए । शनुभाई और अन्य लोगों ने छोटुभाई को चुनाव लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया । पहले तो छोटुभाई ने इन्कार किया, फिर सोचा कि मानना चाहिए । इस प्रकार छोटुभाई सिन्डिकेट के चुनाव लड़ने के लिए तैयार हुए । शेठ गोएन्का और अमृत शेठ के संयुक्त उम्मीदवार के रुप में सिनेट सदस्य बनने के बाद वे चुनाव लड़े और जीते । फिर तो स्टाफ सिलेक्शन और लेक्चरर के इन्टरव्यू लेने भी वे बैठते थे । धीरे-धीरे उनका वर्चस्व बढ़ता गया ।

दिन बीतते गये... १९९३ में एच.एम. पटेल का स्वर्गवास हुआ । इसलिए चारुतर विद्यामंडल के अध्यक्ष पद के लिए चुनाव लड़ने की स्थिति पैदा हूई -

छोटुभाई बताते हैं : ''उस समय पटेल साहब की लॉबी आनंदभाई अमीन को अध्यक्ष पद पर बिठाना चाहती थी, अन्य महानुभाव भी आनंदभाई को सपोर्ट कर रहे थे । लेकिन विद्यानगर की म्युनिसिपालिटी के एकमात्र भीखुभाई के अलावा सभी सभ्य मेरे समर्थन में खड़े थे । १९ सभ्यों में से १८ सभ्यों ने अखबार में विज्ञापन देकर अपने सपोर्ट की घोषणा की थी । विद्यानगर की ९० प्रतिशत जनता और बाकरोल की शत प्रतिशत जनता मेरे साथ थीं । बरो म्युनिसिपालिटी के महेन्द्रभाई पटेल से लेकर राजन विनुभाई पटेल का मुझे साथ था । यह देखकर आनंदभाई को लगा कि वे हार जाएंगे । साथ ही उनके रिश्तेदार तो करमसद के बड़े आदमी थे उन्होंने भी आनंदभाई को चुनाव न लड़ने की सलाह दी । आखिरकार चुनाव के एक दिन पहले आनंदभाई ने निवेदन किया कि वे चुनाव नहीं लडेंगे । लेकिन दूसरे दिन चुनाव था । उसमें आनंदभाई को केवल सौ-दो सौ वोट मिले थे जबकि मुझे ढाई हजार वोट मिले थे । जिस प्रकार पहले के जमाने में हाथी जिस पर पानी का कलश उड़ेलता वह राजा बन जाता उसी प्रकार जनता ने मुझे विजयमाला पहनाया और मैं अध्यक्ष बन गया ।

छोटुभाई मार्च १९९४ में चुनाव जीते और ९ अप्रैल को उन्होंने अध्यक्ष पद का कार्यभार संभाला । अपने गुरु प्रमुखस्वामी की आज्ञा से ही वे अध्यक्ष पद के लिए चुनाव लड़े थे इस बात की स्पष्टता करते हुए वे बताते हैं कि : ''उस समय प्रमुख स्वामी ने दिल्ली से फोन करके मुझे कहा था कि, सी.एल., यह संस्था चलानी है । इसलिए भगवान को याद करके चुनाव लड़ो... और मैं जीता । तत्पश्चात साळंगपुर में स्वामीजी ने स्वयं मुझ से पूजा करवाई थी और आशीर्वाद

दिये थे कि आप किसी भी बात की चिंता मत करो । आपके साथ शास्त्रीजी महाराज हैं । आपको कोई तकलीफ नहीं होगी । आपके सभी संकल्प पूरे होंगे ।''

प्रमुखस्वामी के आशीर्वाद के साथ छोटुभाई ने अध्यक्ष पद संभाला । उस समय की अनुभूति के बारे में बात करते हुए वे बताते हैं कि : ''एक सामान्य आदमी चारुतर विद्यामंडल के अध्यक्ष पद पर बिराजे यह बहुत बड़ी सफलता है। इस स्थान पर इस कुर्सी पर बैठने योग्य चयन हुआ वह मेरी किस्मत थी । बाकी जब हम पढ़ते थे तब इस विस्तार की एक आभा थी । यहाँ ब्रह्माजी की

जो मूर्ति है उसके सामने की सीढी चढ़ने की कोई हिम्मत भी नहीं करता था। सामने पाट पर भाई काका बैठते थे उनके साथ चीमनभाई देसाई बैठे होते... साथ ही में जो बैन्क है वहां सभी जाते लेकिन कोई भी यहां की सीढ़ी चढने की हिम्मत नहीं करता था, हमने भी नहीं की थी ।''

छोटुभाई ने सीढ़ी नहीं चढ़ा था, लेकिन समय रहते वे सीधे शिखर की चोटी पर पहुँच गये । चारुतर विद्यामंडल के सर्वोच्च पद पर बिराजमान हुए... संस्था के सूत्रधार बने । ९ अप्रैल १९९४ के दिन जब उन्होंने अध्यक्ष पद की कुर्सी का कार्यभाल संभाला तब उन्हें पता चला कि कुर्सी के नीचे तो नुकिले हैं अर्थात् इस पद को संभालना इतना आसान नहीं था जितना वे समझते थे ।

मंडल की तिजोरी बिलकुल खाली थी । एक दिन छोटुभाई ने कंसारा को बुलाया और पूछा,

‘‘हमारे पास कितने पैसे हैं ?’’

‘‘पैसे तो है ही नहीं.... ब्लॉक ग्रांट के पैसे आते हैं । वो आ जायें तो लोगों की तनख्वाह होती है वरना नहीं ।’’

‘‘हमारे पास खर्च करने के लिए पैसे हैं ?’’

‘‘नहीं, जरा भी नहीं ।’’

‘‘नुकसान कितना है ?’’

‘‘पिछले साल का नुकसान २५ लाख रुपये है ।’’

इसके अलावा डेढ़ करोड की संपत्ति थी । मंडल पर किसी का उधार बाकी नहीं था, किसी से कोई लेनदेन बाकी न था लेकिन सभी मकान जर्जरित हो चुके थे । उसके चारों ओर बिन ऊपजाऊ जमीन थी जहां कंटीली झाडियां और कचरा पड़ा रहता था । होस्टेल भी बिस्मार हालत में थीं, जिसका रीपेरिंग होना बहुत जरुरी था । लेकिन उसके लिए पैसों की जरुरत थी । पैसा कहां से पैदा करें ?’’

छोटुभाई ने मनोमंथन शुरु किया । कहावत है कि जहां चाह वहां राह... छोटुभाई का मन था इसलिए उन्हें मार्ग मिल गया । कंटीली झाडियों को निकालने के लिए उन्होंने हिम्मत करके पर्यावरण की सुरक्षा के नाम पर हर विद्यार्थी से एक सेमेस्टर के बीस रुपये यानि पूरे वर्ष के चालीस रुपये फीस

दाखिल करने के लिए सोचा । उस समय बीस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे । इस प्रकार चालीस रुपये प्रति विद्यार्थी के हिसाब से वर्ष के आठ लाख रुपयों की इन्कम हो जाती । लेकिन शनुभाई ने उन्हें रोका और कहा कि साहब, आप ऐसी हिम्मत मत करना... आपकी हालत बिगड़ जायेगी । भाई काका के समय में भी आंदोलन छिड़ गया था और एच.एम. पटेल तो बड़े आदमी थे । आपको तो लोग फेंक ही देंगे ।''

''फेंक ही देंगे ना ? और तो कुछ नहीं करेंगे ना ? मैं कोई फालतू आदमी नहीं हूँ, मेरे पास अपनी संपत्ति हैं, मैं अपनी गाड़ी लेकर आता हूँ और मंडल का एक पैसा भी नहीं लेता । इसलिए मुझे फिकर करने की कोई जरुरत नहीं हैं ।''

इस प्रकार छोटुभाई ने परिणाम की चिंता किए बगैर पर्यावरण सुरक्षा के नाम से फीस दाखिल की । दूसरे चरण में प्रवेश फीस दाखिल की । प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल के वर्ष के १०० रुपये और कॉलेज में वार्षिक २०० रुपये... इस प्रकार ३० लाख रुपये एकत्र किये गये ।

भाईकाका

इस प्रकार मंडल की परिस्थिति सुधरी। फिर छोटुभाई ने सोचा कि अब कुछ और करना चाहिए । वे बताते हैं : ''मैं १९९१ में अमरीका गया था वहां की युनिवर्सिटियां मैंने देखी थी, व्यवस्था भी देखी थी, वह देखकर मुझे महसूस हुआ कि भगवान ने मेरे जैसे सामान्य आदमी को निमित्त बनाया है तो फिर मुझे जरुर कुछ करके दिखाना चाहिए ।''

छोटुभाई की इस विचार भावना के पीछे भी कारण था । उन्होंने दो तीन बातें सुनी थीं : भाई काका अहमदाबाद म्युनिसिपालिटी में जुड़े उससे पहले उन्हें १८०० रुपये तनख्वाह मिलती थी । उस समय म्युनिसिपालिटी में ऐसा नियम था कि चीफ इन्जीनियर को १००० रुपयों से अधिक तनख्वाह नहीं दे सकते । इसलिए भाई काका ने १८०० का चेक लौटाकर १००० का चेक स्वीकार किया था । उसी प्रकार भीखाभाई साहब ने भी शिक्षकों को तनख्वाह देने के लिए अपना घर गिरवी रखा था । एच.एम. पटेल आई.सी.एस अधिकारी थे, उन्होंने कलेक्टर पद के अलावा भी कई अन्य उच्च पदों पर काम किया था । वे गुजरात विद्युत बोर्ड के अच्छे चेरमेन थे । छोटुभाई बताते हैं : ''इस महानुभाव की कुर्सी पर बैठने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था । इसलिए मैं भगवान से प्रार्थना करता था कि : हे भगवान ! इस महानुभाव की गरिमा को उचित रुप से संभाल सकूँ इतनी मुझे शक्ति देना ।''

भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली । तथास्तु कहा । लोग कहते थे, छोटुभाई अध्यक्ष तो बन गये लेकिन ६ महीने में ही भाग खड़े होंगे । लेकिन भगवान ने उनका भावी कुछ अलग ही निश्चित कर रखा था । छोटुभाई की किस्मत में यश और ख्याति लिखी थी । भगवान के प्रेरणा से दाताओं ने उन्हें बहुत साथ-सहकार दिया । १९९४ से उन्हें दान मिलने की शुरुआत हुई । जिसके बारे में छोटुभाई बताते हैं कि : ''मैं अध्यक्ष बना तब मोहनलाल सोमेश्वर मिस्त्री

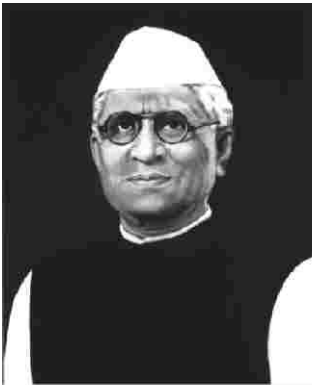

भीखाभाई साहब

स्कूल के स्थान पर सी.वी.एम. प्रायमरी स्कूल चलती थी । उस समय दूध मंडली की वार्षिक सभा में मुझे प्रमुख के स्थान पर आमंत्रित किया गया था । उस सभा में मैंने अपील की कि - मैं स्कूल बनवा सकूँ इसके लिए आप लोग हमें कुछ रकम दान में दीजिये । मेरी अपील के जवाब में दूध मंडली के सभासदों ने अपना मुनाफा छोड़कर मुझे ५१ हजार रुपये दिये थे । वी.वी.सी.सी. बैंक वालों ने भी ५१ हजार रुपये दिये । फिर एक समय ऐसा आया कि मिस्त्री स्कूल जिनके नाम पर है उस सोमेश्वर ट्रस्ट ने भी २५ लाख रुपये दिये ।''

इस प्रकार दान का प्रवाह शुरु हो गया । चारुतर विद्यामंडल की तिजोरी भरने लगी । इसी अरसे में छोटुभाई ने एन.वी. पास कॉलेज बनाने का विचार किया । कॉलेज के दाता नटुभाई वी. पटेल ने मंडल को १५ लाख रुपये दान में दिये थे । एच.एम. पटेल के समय में स्टेम्प पेपर पर इस प्रकार का एम.ओ.यु. साइन किया गया था कि १५ लाख से ऊपर जो भी खर्चा होगा उसे सी.वी.एम. भुगतेगी और कॉलेज की ५० प्रतिशत सीटें सी.वी.एम. भरेगा एवं ५० प्रतिशत सीटें नटुभाई भरेंगे... छोटुभाई यह कॉलेज बनाना चाहते थे । एक दिन नटुभाई ने उनसे कहा, ''छोटुभाई, आप मुझे जवाब दो... अब करना क्या है ? यह कॉलेज आप नहीं बना रहे । मेरे पैसों का क्या हुआ ? आपने मुझे वचन दिया था उसका क्या हुआ ?''

''काका (चाचा), आप जो भी कह रहे हैं सब सही हैं । मुझे कॉलेज बनाना है, लेकिन आप मुझे एक करोड़ रुपया दो ।''

यह सुनकर चाचा बौखलाये, लेकिन फिर उस पवित्र आत्मा ने छोटुभाई को एक करोड़ रुपये दिये जिससे एन.वी. पास कॉलेज बनी ।

एनवीपास कॉलेज

छोटुभाई ने एन.वी. पास बनाकर एक बाधा सफलतापूर्वक पार की, फिर, जीसेट इन्जीनियरिंग कॉलेज के लिए दूसरे बाधारूपी चक्र को भेदने की तैयारियां आरंभ कर दी । इस संदर्भ में शिक्षण को समर्पित छोटुभाई कहते हैं कि : ''मैंने १९९५ में स्वनिर्भर इंजिनियरींग के लिए सोचा था । उस समय इन्फोर्मेशन टेक्नोलोजी नाम का कोई कोर्स भी नहीं था । रिजर्व बैंक के आंकडों के अनुसार तब केमिकल इन्डस्ट्री में १२० हजार करोड़ रुपये खर्च हो रहे थे । इन दोनों कोर्स के साथ कालेज बनाना था । आर्किटेक सूर्यकांतभाई के पास डिजाईन बनवाई । तब किरीटभाई अमेरिका में अपने परिवार के साथ रहते थे । उन्होंने बड़ी सभा का आयोजन करके इस कालेज हेतु दान देने की घोषणा की थी । किरीटभाई के हाथों से ही भूमिपूजन भी करवाना था ।''

यहां तक सब कुछ सही चल रहा था, लेकिन फिर मुश्किलों का दौर शुरु हुआ । उस समय मद्रास की अपोलो अस्पताल में छोटुभाई की बेटी का आपरेशन हुआ था । उस आपरेशन के बाद छोटुभाई मद्रास से प्लेन द्वारा अपने खर्च से वापस लौटे थे, लेकिन उनके पहुँचने से पहले किरीटभाई अमरीका वापस जाने के लिए निकल चुके थे । मंडल के मंत्रियों ने छोटुभाई को इस बारे

में नहीं बताया था क्योंकि उन्हें डर था कि छोटुभाई को धक्का लगेगा ।

भूमिपूजन का समय बीत रहा था । इसलिए छोटुभाई भूमिपूजन करने बैठे। सभी से कहा कि, ''भगवान से प्रार्थना करो कि हमारा संकल्प पूर्ण हो... ।'' इसी प्रार्थना के साथ भूमिपूजन का विधि संपन्न हुआ ।

जीसेट कॉलेज

''भूमिपूजन के बाद मैंने किरीट भाई को अमरीका फोन लगाया...'' संकटों का स्वस्थता से सामना करने वाले छोटुभाई बताते हैं कि : ''एक मिनट का ९० रुपये चार्ज लगता था । उस पूरे दिन में मैंने १६,००० रुपयों के फोन किये थे वो भी स्वयं के खर्चे से । लेकिन किरीटभाई ने मुझे बहुत भला-बुरा कहा था । ''मिस्टर सी.एल. पटेल, आप अपने अहम् की संतुष्टि के कारण इस कॉलेज का निर्माण कर रहे हैं । एच.एम. पटेल मूर्ख आदमी नहीं थे । बी.वी.एम. के होते हुए उन्होंने दूसरे कोलेज के बारे में नहीं सोचा था । आप गलत तरीके से इस कॉलेज के निर्माण के बारे में सोच रहे हैं । उसकी कोई जरुरत ही नहीं है । बी.वी.एम. है ही... यह तो अच्छा हुआ कि लोगों ने मुझे चेतावनी दे दी... वरना मेरे तो सारे पैसे गढ्ढे में चले जाते ।''

''किरीटभाई, आपने मुझे बहुत कुछ सुना दिया है, अब और भी कुछ सुनाना बाकी न रहा हों तो मैं फोन रख दूँ क्या...'' ऐसा बोलकर छोटुभाई ने फोन रख दिया । लेकिन मन में चिंता तो थी क्योंकि तीन लाख ७५ हजार रुपयों का कोन्ट्राक्ट वे देकर बैठे थे । भूमि पूजन भी हो गया था और पास में पैसा था नहीं । संकट के इस समय में भगवान के अलावा और किसी से आशा न थी । आखिर भगवान ने भक्त की प्रार्थना सुन ली । बात कुछ इस प्रकार से भी अखबारों में समाचार प्रसिद्ध हुए कि गुजरात में नये इन्जीनियरिंग कॉलेज को मान्यता प्राप्त हुई है । जिसे पढ़कर गोरधनभाई हाथीभाई चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी दिनशा देसाई ने छोटुभाई को फोन लगाया, फिर उनके बीच संवाद कुछ इस प्रकार से हुआ :

''सी.एल. पटेल, आप जो कॉलेज बना रहे हो उसके बारे में क्या सोचा है ?''

''हां, तीन करोड़ रुपये जो दाता देगा उसका नाम रखने का सोचा है ।''

''हम यदि सोचे तो ?''

''जरुर सोचिये ।''

इस बातचीत के बाद गोरधन काका ने छोटुभाई को फोन करके कहा था कि हम आपको मिलने आते हैं... लेकिन उस समय छोटुभाई की बहन वड़ोदरा के भाईलाल अमीन होस्पिटल में दाखिल थी, उन्हें ब्रेन हेमरेज हुआ था। ढाई सेन्टीमीटर का क्लोट था । ऑपरेशन होना था इसलिए छोटुभाई को उस दिन वड़ोदरा जाना था। उन्होंने गोरधन काका से कहा किः उत्तरायण (मकर संक्रांति) के बाद मैं ही आपको मिलने आऊंगा, तब सारी बातचीत करेंगे ।''

इस प्रकार तय समयानुसार छोटुभाई और गोरधन काका उत्तरायण के बाद मिले । बातचीत हुई । गोरधन काका ने तीन करोड़ रुपये देने का निर्णय लिया । लेकिन उस कोन्ट्रेक्ट का क्या किया जाय । इस बारे में छोटुभाई के मन में थोडी कशमकश थी, लेकिन एक दरवाजा बंद होने से दूसरा खुल जाता है । इसी कहावत को प्रमाणित करते छोटुभाई के लिए एक नहीं दो-दो दरवाजे खुल गये थे । चरोतर नागरिक सहकारी बैंक के और अल्पा फायनान्स के । उस विषय में छोटुभाई बताते हैं कि : ''आणंद के चीमनभाई साथी चरोतर नागरिक सहकारी बैंक के चेरमेन थे । उन्होंने मुझे कहा था कि पैसे की कमी के कारण कोई प्रोजेक्ट अवरुध्ध नहीं होना चाहिए । आप इस बात का ध्यान रखना । हम आपके साथ ही हैं । इसी प्रकार अल्पा फायनान्सवाले रमणभाई ने भी संपूर्ण सहकार दिया था । वे कार्यकारिणी के सभ्य भी थे । उन्होंने कहा था कि आप वी.वी.सी.सी. बैंक के दो करोड़ रुपयों के चेक लिखना, आपके चेक कभी भी रिटर्न नहीं होंगे ।''

इन शब्दों से छोटुभाई के मन का बोझ दूर हो गया । उन्होंने चरोतर नागरिक सहकारी बैंक से ३ लाख ७५ हजार रुपयों का लोन लिया । गोरधन

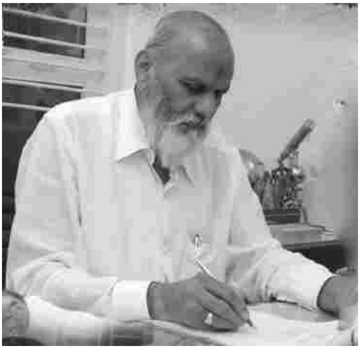

काका ने पांच साल में दान की राशि पूरी की । इस प्रकार छोटुभाई ने दूसरी बाधा को पार करते हुए 'जीसेट' की स्थापना की । छोटुभाई ने कॉलेज बनाया, साथ ही उसकी जरुरतों को भी पूरा किया । हॉस्टलों की सुविधा भी

दी। पैसा नहीं था फिर भी ८० क्वॉटर बनाये । बाग-बगीचे बनवाये । इस प्रकार भाई काका का सपना साकार करने की दिशा में अग्रसर हुए । तत्पश्चात 'सेमकोम' का विचार आया । उन दिनों शनुभाई पटेल रिटायर हुए थे । उसके बारे में बात करते हुए छोटुभाई बताते हैं कि : ''उस समय आर.सी. देसाई ने शनुभाई को रिटायर करने की परिस्थितियाँ उत्पन्न की थी । मैं उस समय सरदार पटेल युनिवर्सिटी के कुलपति की पोस्ट के लिए पेनल मैं कौन से तीन रखूँ उसके बारे में सोच रहा था । फिर मैंने वी.एस. पटेल, शनुभाई और किसी तीसरे का नाम रखा था । वे

सेमकोम

ए.आई.सी.टी. के चेरमेन की सर्च कमिटी के चेरमेन भी थे । अंग्रेजी के प्रोफेसर और गुजरात कॉलेज के प्रिन्सीपाल रह चुके वी.जे. त्रिवेदी सर्च कमिटी के सदस्य थे । आर.सी. देसाई ने उनसे बात करके शनुभाई का नाम निकलवा दिया और अपना नाम शामिल करा दिया । मैं अमरीका से वापस आया तब मुझे इस बात का पता चला । इसलिए मैं वी.जे. त्रिवेदी के घर पर गया । तब उन्होंने मुझे विस्तार पूर्वक सारी बात बताई । इस घटना क्रम के चलते शनुभाई ने नौकरी छोड़ दिया । वे स्वयं को अपमानित महसूस कर रहे थे । लेकिन मेरे उनके साथ घनिष्ठ संबंध थे । इसलिए मैंने उन्हें सेमकोम चलाने के लिए मना लिया । इस प्रकार सेमकोम की शुरुआत हुई ।''

सेमकोम के बाद छोटुभाई ने 'सिकार्ट' और 'आइस्टार' के बारे में सोचा।

सीकार्ट

उस समय वे विदेश प्रवास पर थे । छोटुभाई बताते हैं किः ''उन दिनों मैं जर्मनी, फ्रांस, स्विट्जरलैन्ड और नीदरलैन्ड गया था । नीदरलैन्ड में हमारे होटल के पास ही एक बड़ा सा फार्म था, वहां एक दम्पति ने ५० गायें रखी थी और वे ५० एकड़ जमीन में खेती करते थे । जिसे देख मुझे भी खेती करने की प्रेरणा मिली और नीदरलैन्ड के इसी होटल में मैंने सिकार्ट-सोफिस्टिकेटेड इन्स्ट्रुमेन्टेशन सेन्टर फोर एप्लाईड रिसर्च एन्ड टेस्टिंग और आईस्टार-इन्स्टिट्यूट ऑफ सायन्स एन्ड टेक्नोलोजी फोर एडवान्स रिसर्च के बारे में सोचा और उसका नामकरण किया ।''

इन्हीं दिनो, मुंबई के दामोदरदास ट्रस्ट ने पी जी सेन्टर फोर फार्मसी एज्युकेशन के लिए बीस लाख रुपये दिये । अमरिका के अशोकभाई पटेल ने भी पी जी सेन्टर फॉर इन्जीनियरिंग एन्ड टेक्नोलोजी के लिए पहले ही ४५ लाख रुपये दिये थे । अमरीका के ही जयंतिभाई सी.पटेल ने एक मिलियन डॉलर देने का निर्णय लिया था । उन्होंने पांच वर्ष तक १५००० डॉलर

आईस्टार

दिये । फिर चांगा के कोलेज वालों ने कहा कि अब हमें पैसे दो । इसलिए जयंतीभाई ने छोटुभाई से पूछा : ''अब मैं क्या करूं ?''

''आपके पैसों पर अब उनका नाम लिखा है । इसलिए अब आप उन्हें पैसे दीजिये ।'' छोटुभाई के इस प्रत्युत्तर के बाद जयंतीभाई ने चांगा में पैसा देना शुरु किया । लेकिन छोटुभाई को अनेक दाताओं द्वारा दान मिलने का प्रवाह तो अविरत चलता ही रहा, जिससे उन्होंने अनेक संस्थाएं खड़ी की ।

एक दीप से दूसरा दीप जगमगाता है । उसी प्रकार छोटुभाई ने एक के बाद शिक्षण संस्थाओं की लाईन खड़ी कर दी । उनके शब्दकोश में आराम नाम का शब्द नहीं था । निरंतर कुछ नया कर दिखाने का जोश उनके मन में हमेशा रहता है । इसी से ''आई टी सी'' का विचार का भी उद्‌भव हुआ । छोटुभाई ने सन २००० में भाईकाका के बेटे चीमनभाई को पत्र लिखा : ''पैसे वाले बच्चे तो कोलेज में पढेंगे लेकिन यदि गरीब बच्चों को कुशल कारीगर बनाना हो तो आई टी सी बनानी चाहिए। उसके लिए आप मुझे पोल फैक्टरी में जगह दीजिए ।''

पत्र के जवाब में चीमनभाई ने लिखा था कि : हमें चारुतर ग्रामोद्धार की खाट खड़ी नहीं करनी हैं, हम जगह नहीं दे सकते ।

चीमनभाई एम. यु. इन्डस्ट्रीयल ट्रेनींग सेन्टर

इस प्रत्युत्तर के बाद छोटुभाई ने सोचा कि अब कुछ और सोचना पड़ेगा । उस समय उनके मित्र रावजीभाई पटेल का स्वर्गवास हुआ था । छोटुभाई ने रावजीभाई के बेटे और जमाई से कहा : ''जी आई डी सी के पीछे आपकी जो जमीन है उसे आपने सात हजार प्रति गुंठा के हिसाब से खरीदी थी । वो जमीन आप हमें बख्शीश में दिलवाईये। मैं किसी के पास से आपने जो १७-१८ लाख रुपये भरे हैं वह दिलवा दूंगा ।''

इस प्रकार छोटुभाई ने ४६८ गुंठा जमीन बख्शीश में ली । वहां इन्जीनियरिंग कॉलेज और आई टी सी बनाने का विचार किया । अफ्रीका के एम.यु. टेकनिकल वाले चीमनभाई का परिवार होस्टल बनाने के लिए ६० लाख रुपये देने के लिए राजी हो गये । लेकिन छोटुभाई उन्हें न्यू विद्यानगर में जो ४६८ गुंठा जमीन ले रखी थी वहां ले गये और बोले कि : ''यहां मुझे आई टी सी बनानी है और जो डेढ़ करोड रुपया देगा उसे कॉलेज का नाम दूंगा ।'' इसलिए चीमनभाई के बेटे अजीतभाई ने डेढ़ करोड रुपये दिये । इस प्रकार आई टी सी चीमनभाई एम.यु. इन्डस्ट्रीज ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना हुई ।

छोटुभाई ने आई टी सी के बाद इन्जीनियरिंग के बारे में सोचा । उसके लिए धर्मज के निवासी तुलसीदास वल्लभभाई के बेटे परमानंदभाई के घर मुंबई गये । उनके पास अरबों की संपत्ति थी । छोटुभाई ने इन्जीनियरिंग कोलेज के

लिए अपना विचार वहाँ रखा । उनके विचार का आशय भांपकर बाद में परमानंदभाई और उनकी पत्नी छोटुभाई से मिलने आये । उन्होंने कहा : ''मैं जीसेट के लिए सात करोड दूँगा और नई कोलेज के लिए दस करोड दूंगा । कुल १७ करोड दूंगा लेकिन दोनों कॉलेज में मेरा नाम होना चाहिए ।''

''आप केवल जीसेट के लिए यदि १७ करोड़ देंगे तो भी जी.एच. पटेल के नाम में कोई फेर बदल नहीं कर सकता....'' बात वहीं अटक गई । उसके बाद अडास के वतनी हाल में अमरीका में स्थित श्री अरविंदभाई पटेल (बी.वी.एम. के भूतपूर्व विद्यार्थी) के सुपुत्र उद्योगपति श्री मुकेशभाई के सामने प्रस्ताव रखने से उन्होंने अपने पिताश्री के नाम पर कोलेज (ए.डी.आई.टी) बनाने के लिए ६ महीने में पांच करोड़ रुपये और उसके बाद फिर से करीब डेढ़ करोड़ रुपयों की मदद की थी ।

इस प्रकार छोटुभाई एक के बाद एक सिद्धि हासिल करते हुए कॉलेज का निर्माण करते रहे । फिर उन्होंने आयुर्वेदिक कॉलेज बनाने का संकल्प लिया । दरमियान एक घटना घटी । छोटुभाई हेरकटिंग सैलून में से आ रहे थे । तब रास्ते में राजन विनुभाई पटेल उनसे मिले और बोले कि, ''काका, आप सौ साल के होने वाले हैं ।''

''मुझे सौ साल तक नहीं जीना है...'' छोटुभाई ने हँसते हुए कहा। इसलिए राजन ने उन्हें ऑफिस में बुलाया । छोटुभाई ऑफिस गये, तब राजन ने उनसे कहा : ''हम पापा का स्टेच्यू रखना चाहते हैं ।''

''गुड । योग्य स्थान पर रखना । उसमें कुछ गलत नहीं हैं ।''

‘‘मोटा बजार में रखने वाले हैं ।’’

‘‘नहीं, मोटा बाजार में मत रखो । उस स्थान पर तो सरदार पटेल, भाईकाका, भीखाभाई साहब या फिर एच.एम. पटेल के पूतले रख सकते हैं । विनुभाई के स्टेच्यू के लिए कोई अन्य स्थान सोचो ।’’ छोटुभाई ऐसा बोलकर वहाँ से निकल गये । लेकिन फिर गांव वालों ने छोटुभाई को पत्र लिखा कि मोटा बजार में ही विनुभाई का स्टेच्यू रखवाने का निर्णय लिया गया है जिसे पढ़कर छोटुभाई ने राजन को पत्र लिखा : ‘‘भाई श्री राजन, आप अपने पिताश्री का स्टेच्यू मोटा बाजार में रखने का सोच रहे हैं वह योग्य नहीं है । उस स्थान पर सरदार पटेल, भाई काका, भीखाभाई साहब या फिर एच.एम. पटेल, इन चारों में से किसी का हक बनता है । विनुभाई का स्टेच्यु भी योग्य स्थान पर रखा जायेगा लेकिन इस स्थान के लिए आप विचार मत करो...’’

‘‘फिर संघर्ष शुरु हुआ...’’ छोटुभाई ने बात आगे बढाई... ‘‘एक दिन बरो म्युनिसिपालिटी के महेन्द्रभाई मुझसे मिलने आये और बोले कि, ‘‘विनुभाई की पत्नी को बहुत धक्का लगा है...’’

‘‘विनुभाई की पत्नी को धक्का लगा हो तो डी.एस.पी. और कलेक्टर से पूछकर देखूँगा कि यदि मेरे अलावा अन्य किसी ने विरोध न किया हो तो मेरे अकेले को विरोध करने की जरुरत नहीं है ।’’ छोटुभाई ने कहा और डी.एस.पी. से पूछा तब उन्होंने कहा कि :

‘‘छोटुभाई, आपके अलावा किसी का विरोध नहीं हैं ।’

‘‘तो अब मैं विरोध नहीं करुंगा ।’’

''तो आप विरोध नहीं कर रहे इसका लिखित पत्र दो ।''

''ऐसा थोड़ी हो सकता है... मैं थूका हुआ निगलता नहीं हूँ । मेरा विरोध तो आज भी कायम है । आप स्टेच्यु रखोगे तो मैं वहां हाजिर नहीं रहूँगा और उपवास भी नहीं रखूँगा । लेकिन मेरा विरोध तो आज भी है ।''

और फिर, छोटुभाई मानसरोवर गये तब मोटा बजार में विनुभाई का स्टेच्यु रखवा दिया गया । छोटुभाई बताते हैं कि : ''मैं रोज चार बार मोटा बाजार के रास्ते से गुजरता हूँ । लेकिन मेरे मन में कोई नफरत नहीं है । लोगों को यदि किसी बात की चिंता न हो तो फिर मैं क्यों फिकर करुं ?''

छोटुभाई के मन में स्टेच्यू को लेकर कोई कड़वाहट नहीं है । लेकिन उसी मुद्दे पर उनकी परेशानियां शुरु हो गई । इस बारे में वे बताते हैं कि : ''इस घटना के चलते राजन ने मुझे तंग करना शुरु किया । ब्लेकमेलिंग शुरु किया । हर रोज कोई नया बहाना ढूंढना । उसने चेरिटी कमिश्नर को लिखा कि छोटुभाई आपकी मंजूरी के बगैर करोड़ो रुपयों की लोन लेते हैं और बैंक को लिखा कि, आपके पुराने मैनेजर उनके प्रभाव में आकर फोर्मालिटी पूरी लिये बगैर ही लोन पास कर देते हैं ।''

इस प्रकार तंग होने के कारण छोटुभाई को डायाबिटीज हो गया । फिर भी स्वस्थता से आगे बढे । मानसिक संघर्ष था, लेकिन मनोबल दृढ था । उसी मनोबल के आधार पर उन्होंने आयुर्वेदिक कोलेज का काम आगे बढ़ाया । लेकिन कहते हैं ना कि मुसीबत आती है तो चारों ओर से आती है - तभी चेरिटी कमिश्नर का पत्र आया कि हमारी मंजूरी के बिना आप कोई लोन या

अन्य कोई कार्यवाही नहीं कर सकते । बैंक को भी सूचना दी गई कि फोर्मलिटी पूरी किये बिना चारुतर विद्यामंडल को लोन नहीं देना ।

ऐसी परिस्थिति में कोई भी व्यक्ति हताश हो सकता है । परिस्थितियों के आगे घुटने टेक देता । लेकिन छोटुभाई हार मानने वालों में से न थे । एक ईश्वर और दूसरे अपने गुरु प्रमुख स्वामी के अलावा किसी तीसरे की शरण उन्होंने कभी भी स्वीकारी न थी । वे प्रमुख स्वामी जी के पास गये । बोलेः ''बापा, आशीर्वाद दीजिये...'' बापा के आशीर्वाद मिले और जयंतीभाई सी. पटेल के पवित्र पैसे आये । प्रमुख स्वामी के परम भक्त छोटुभाई इस के बारे मे बताते हैं कि : ''मैं और चारुतर विद्यामंडल के मानद् सहमंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल लंडन में जयंतीभाई से मिले थे । उनके साथ बातचीत हुई और उन्होंने दो करोड़ रुपये देने का निर्णय लिया । एक करोड़ कॉलेज के लिए और एक करोड़ होस्पिटल के लिए । इस प्रकार आयुर्वेदिक कोलेज के लिए जयंतीभाई के पवित्र पैसे आये । आप एक दाना डालो तो भगवान दो सौ दाने देता है । आयुर्वेदिक में १५ करोड़ का खर्च हुआ । लेकिन फिर भी एक पैसे का उधार नहीं लेना पड़ा था ।''

छोटुभाई ने आयुर्वेद के बाद बायो टेक्नोलोजी के बारे में सोचा । जम्मू से तमिलनाडु तक के २१ बायोटेक्नोलोजिस्टों को आमंत्रित किया । सलाह-मशविरा किया की और १५ करोड़ का प्रकल्प हाथ में लिया । तभी अशोकभाई पटेल और उनकी पत्नी रीटा बहन छोटुभाई से मिले और उन्होंने कहा कि वे दो करोड़ रुपये देना चाहते हैं ।''

''आपको पैसा देना है, वह अच्छी बात है, लेकिन आप चांगा के हैं । इसलिए दो करोड़ रुपये वहां दीजिये ।'' छोटुभाई ने कहा । लेकिन दूसरे दिन

अशोकभाई, रीटाबहन और उनके दो पुत्र आये और बोले कि : ''समय आयेगा तब चांगा को भी पैसा देंगे । लेकिन अभी तो हमारी इच्छा आपको सवा दो करोड़ रुपये देने की है, आपको वो लेने हैं ?''

इस प्रकार दाताओं की कृपा बरसती रही और ''अरीबास-अशोक एन्ड रीटा पटेल इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्टीग्रेटेड स्टडी इन बायोटेक्नोलॉजी'' की स्थापना हुई ।

इस प्रकार छोटुभाई को दाताओं द्वारा अनवरत दान मिलता रहा है । जिससे संस्थाओं की स्थापना होती रही है । आज के जमाने में कोई भी व्यक्ति बिना कारण के या स्वार्थ के किसी को पांच रुपये भी नहीं देता । लेकिन निःस्वार्थ भाव से ऋषिकर्म कर रहे छोटुभाई में दाताओं को तो संपूर्ण विश्वास और श्रद्धा है । जयंतीभाई, अशोकभाई पटेल, मनुभाई सोमाभाई देसाई, गोरधनभाई हाथीभाई पटेल, इन्दुकाका इफ्कोवाला, वासंती बहन चंदुभाई

अरीबास

और अन्य दाताओं की तरफ से दान के रुप में पैसों की बरसात हुई जिससे छोटुभाई ने गुजरात का सबसे बड़ा शिक्षा संस्थान खड़ा कर दिया ।

छोटुभाई ने शिक्षा की ज्योति तो प्रज्वलित की ही है । लेकिन साथ ही सेवा के यज्ञ को भी आगे बढ़ाया है । कुदरती आपत्ति आई हो तब संस्था के विद्यार्थीगण, अध्यापकगण और कर्मचारीगण छोटुभाई के मार्गदर्शन में सेवा का कार्य करते हैं । इस संदर्भ में छोटुभाई बताते हैं कि : ''ओरिस्सा में बाढ आई

हों या लातूर में धरतीकंप हुआ हों, अतिवृष्टि हुई हों या अकाल पड़ा हों, किसी भी प्रकार के संकट के समय हम लोगों को सहायता करने का प्रयत्न करते हैं । कच्छ में धरतीकंप हुआ था तब धोलवीरा के आसपास के सात गांवों की स्कूल हमने शत प्रतिशत खर्च से बनवाई थी, सभी स्कूल का नाम सरदार वल्लभभाई पटेल प्राथमिक शाला रखा गया है । इन स्कूलों के निर्माण के लिए कौशिकभाई पटेल, टाउन क्लब, विद्यानगर और भारत पाटीदार समाज का सहयोग मिला था ।''

कुदरती आपत्ति की तरह ही मानव सर्जित आपत्ति के समय भी छोटुभाई लोक सेवा के लिए तैयार रहते हैं । आतंकवादियों के अत्याचार के कारण अनाथ बने कश्मीरी बच्चों को चारुतर विद्यामंडल की कॉलेज में अभ्यास करने का उन्होंने अवसर दिया । इस विषय में बात करते हुए छोटुभाई बताते हैं कि : ''न्यू विद्यानगर के प्रारंभ के वर्ष थे... उस समय गोधरा कांड के बाद राजमोहन गांधी के ''मिशन फॉर पीस'' के सदस्य मुझसे मिलने आये थे । जिसमें दो सदस्य कश्मीर के भी थे । मैंने उनसे एक ही बात कही कि आप जहाँ आये हैं वह शिक्षा का धाम है । हम नवजुवानों को तैयार करने का काम करते हैं, उन्हें उच्च अभ्यास के लिए अवसर प्रदान करते हैं । आतंकवादियों ने कश्मीर को बद से बदतर बना दिया है । उन्होंने कितने ही मासूम बच्चों को अनाथ बनाया है । इन अनाथ बच्चों में से जिनके पास उच्च शिक्षा के लिए व्यवस्था न हों ऐसे २५ छात्र मुझे दो.... उन्होंने २२ लड़के और २ लड़कियों को यहां भेजा । उनके पढ़ने का शत प्रतिशत खर्चा हमने उठाया । उनके रहने, खाने और प्रवास का खर्चा भी हम देते थे । युनिफोर्म भी निःशुल्क देते थे । इस प्रकार

हमने उन्हें पढ़ाया । कोई मुश्किल परिस्थिति उत्पन्न हो इसके लिए योग्य वातावरण भी खड़ा किया ।''

छोटुभाई यह बात कर रहे थे तब उन्हें कश्मीर के साथ जुड़ा हुआ डोडा का एक प्रसंग याद आया :

''गुलाम नबी आजाद जब कश्मीर के मुख्यमंत्री थे तब उनके क्षेत्र में आतंकवादियों ने १९ हिन्दुओं को एक ही रात में मार डाला था । मुझे वहां जाने का विचार आया । सेमकोम के प्रिन्सिपल निखिल झवेरी भी मेरे साथ आने के लिए तैयार थे लेकिन डोडा में आतंकवादी अभी भी छुपे हुए हैं ऐसा समाचार मुझे मिला था । इसलिए मैंने उन्हें आने से रोक दिया और खुद अकेले ही वहां गया । राजमोहन के मिशन के सदस्य और हाईकोर्ट के एडवोकेट अल्ताफ को बताकर मैं कश्मीर जाने के लिए निकला । उस दिन वहां प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह भी पधारने वाले थे । इसलिए लोगों ने स्वयंभू बंद का आयोजन किया था । मैं भी उसी दिन एरपोर्ट पर उतरा, एरपोर्ट के अधिकारी समझे कि मैं भी मनमोहन सिंहजी के काफिले के साथ हूँ । इसलिए मुझे वेन में ले गये । लेकिन मैंने उन्हें बताया कि मैं प्रधानमंत्री जी के साथ नहीं हूँ । अलग से आया हूँ ।

फिर वे मुझे दूसरे रास्ते से बाहर ले गये । एरपोर्ट पर मुझे लेने बहुत से छात्र आये थे । मैं उनके साथ निकला । मैं तिलक और टीका लगाता हूँ । इसलिए आर्मी के लोग मुझे देखकर कहते कि एक हिन्दु का मुसलमान कितना आदर करते हैं...''

''पहले मैंने दो हिंदू स्थानों की मुलाकात ली । श्रीनगर में शंकराचार्य के मठ में गया । वहां पुलिस के आदमी ही पाठ-पूजा करते थे । कोई हिन्दू दिखा नहीं । वहां माताजी का बड़ा सा संकुल है । यहां भी पुलिस के ही लोग आरती करते थे । आरती के पश्चात खीर का प्रसाद लिया । फिर जुम्मा मस्जिद गया । भंडार में सौ रुपये रखे । हिन्दू और मुस्लिम भाईचारे में रहे ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो और कश्मीर की रौनक फिर से लौट आये, यही ईश्वर और अल्लाह से प्रार्थना करके बाहर निकला । फिर टैक्सी से तीन-चार घंटे की यात्रा करने के बाद शाम को चार बजे डोडा पहुँचा । आतंकवादियों ने जहां हत्याकांड किया था उस स्थान पर दूसरे दिन जाना था । एक मुस्लिम भाई और हिन्दुस्तान टाइम्स के रिपोर्टर मेरे साथ आनेवाले थे...''

छोटुभाई दोनों को साथ लेकर सुबह आठ बजे चेक पोस्ट पर पहुंचे । लेकिन उन्हें रोका गया... मिलिटरी ने उन्हें आगे न बढ़ने की सूचना दी । छोटुभाई और उनके साथी तीन घंटे तक गिड़गिड़ाये । इसलिए मिलिटरी ने उन्हें कलेक्टर से मिलने की सलाह दी । फिर तीनों ११ बजे कलेक्टर से मिलने गये । छोटुभाई ने कलेक्टर से कहा कि : ''मेरा कोई राज़नीतिक उद्देश्य नहीं है । मैं तो शिक्षा के उद्देश्य से आया हूँ ।''

''आप सीनियर सुप्रिन्टेन्डन्ट ओफ पुलिस से मिलो...'' कलेक्टर ने कहा,

इसलिए छोटुभाई एस पी सरदारजी को मिले और अपना उद्देश्य समझाकर जाने की अनुमति देने के लिए नम्र विनेदन किया । लेकिन एस पी ने कहा : ''अभी भी वहां आतंकवादी छिपे हुए हैं । हम आपको वहां जाने की अनुमति नहीं दे सकते....''

''लेकिन मेरा उद्देश्य तो केवल शैक्षणिक है, राजनीतिक नहीं हैं...''

''नहीं, वहां जाना खतरे से खाली नहीं है । आप वहां जाने का विचार छोड़ दो।''

''लेकिन मैं अपने हिसाब से और अपने रिस्क पर जाने के लिए तैयार हूँ।''

''आप मौत के मुँह में जाना चाहते हैं । लेकिन हम आपको अनुमति नहीं दे सकते ।''

छोटुभाई ने सरदार जी को समझाने का बहुत प्रयत्न किया । लेकिन वे अपनी बात पर अडिग रहे । इसलिए छोटुभाई ने मोबाईल पर मिलिटरी के अधिकारी को संपर्क कर अपना आशय उन्हें समझाया और स्वयं को वहां जाने देने के लिए नम्र निवेदन किया । फिर उस अधिकारी ने कहा ।

''तुम ऐसे जा सकते हो ?''

''ऐसे कैसे ?''

''चोरी छिपा ...''

''हां, चोरीछिपी से जाऊंगा, अगर आप जाने दोगे तो...''

‘‘नहीं, मैं जाने नहीं दूंगा । तुम पकड़े जाओगे तो मैं अरेस्ट करुंगा ।’’

‘‘ठीक है...’’ ऐसा बोलकर छोटुभाई भगवान का नाम लेकर चोरी छिपे निकल पड़े । आगे फतेह थी । छोटुभाई को जहां पहुंचना था वहां वे पहुंच गये।

‘‘६७०० फीट की ऊंचाई पर बसा हुआ वह छोटा सा गांव था... छोटुभाई जब यह बात बता रहे थे तब उनके स्वर से करुणा झलक रही थी : ‘‘वहां १४ बाय १४ का एक कमरा था । दीवार पर गोलियों के निशान थे । इसी जगह पर आतंकवादियों ने १९ लोगों को मार डाला था । एक बुढ़िया दो बच्चों के साथ बैठी थी । १६ विधवा स्त्री और ५२ बच्चे थे । सभी बच्चे छोटे थे । प्राथमिक या माध्यमिक शाला में पढ़ने की उनकी उमर थी । उनका शिक्षा का माध्यम अलग होने के कारण चारुतर विद्यामंडल की शाला में पढ़ाने का लाभ उन्हें नहीं दे सकते थे । लेकिन मैंने उन्हें पढ़ाने की व्यवस्था मिलिटरी कैम्प में करवा दी और तीन कश्मीरी पंडित लड़कियों को मंडल में उच्च शिक्षा दिलवाई।’’

ऐसे हैं छोटुभाई, अपनी जान की परवाह किये बिना ही कश्मीर गये और छात्रों को पढ़ाने की व्यवस्था की । शिक्षा के प्रति यह कैसी निष्ठा !

शिक्षा के प्रति छोटुभाई के समर्पण और सेवाभाव की लोगों ने कदर की है और अनेक इनाम, मानद उपाधि और पुरस्कार देकर उनका गौरव बढाया है । कोई उन्हें शिक्षा का महर्षि कहता है तो कोई उन्हें मैनेजमेन्ट गुरु कहता है !

‘‘लेकिन आप स्वयं को कैसे पहचानना पसंद करोगे ?’’ इस सवाल के जवाब में छोटुभाई हँसकर कहते हैं कि ‘‘मैं एक सामान्य आदमी हूँ और लोगों

के साथ-सहकार से असामान्य काम करता हूँ।'' छोटुभाई भले ही स्वयं को सामान्य व्यक्ति बतायें, लेकिन उनके संघर्ष और उपलब्धियों के बारे में जानने के बाद मेरी तरह शायद आप भी उनकी गिनती असामान्य व्यक्ति की तरह ही करेंगे।

•

बात हमारी पक्की है...

''छोटु, हमने तेरी शादी करने का सोचा है...''

''लेकिन मैं तो लड़की को देखने के बाद ही शादी करुंगा ।''

''देखने जाना... लेकिन शादी तो वहीं होगी !''

सन् १९५३ में... लल्लू भाई के साथ उपरोक्त वार्तालाप हुआ था, तब छोटुभाई की उमर केवल १८ वर्ष की थी । वे तो पढ़ने के लिए अमरीका जाना चाहते थे । बर्कले युनिवर्सिटी में उन्हें प्रवेश भी मिल गया था । लेकिन दोस्तों और रिश्तेदारों के कहने से लल्लूभाई ने अपने इकलौते बेटे को विदेश भेजने का विचार छोड़ दिया और उसकी शादी करवाने की तैयारियाँ शुरु कर दी । उन दिनों लड़का लड़की को देखने की बात करें यह बात माँ-बाप सहन नहीं कर सकते थे । फिर भी छोटुभाई ने कन्या को देखने की बात कही तो लल्लूभाई ने भी हामी भर दी । साथ में यह भी बता दिया कि ''शादी तो वहीं होगी ।''

फिर छोटुभाई सामरखा के छोटाभाई लल्लूभाई पटेल की १६ साल की कन्या को देखने गये । उस समय के संस्मरणों के बारे में छोटुभाई बताते हैं कि : ''मेरी उमर और मेरी ऊँचाई के हिसाब से मुझे कन्या ठीक लगी । निखरता बदन और गोरा रंग । तब गांव की लड़कियां जितना अधिक से अधिक पढ़

सकती थी उतनी पढ़ाई यानि की वर्नाक्युलर फाइनल तक वह पढ़ी थी । मुझे लगा कि तकलीफ नहीं होगी ।''

''आपने उन्हें कोई प्रश्न पूछे थे ?'' इस सवाल के जवाब में छोटुभाई कहते हैं : ''मैंने कुछ पूछा नहीं था और शायद पूछता तो भी वह जवाब न दे पाती । उस समय मैं उनके सामने देख रहा था लेकिन वह तो नजरें झुकाए बैठी थीं ।''

छोटुभाई ने भले ही सवाल न पूछे हों, लेकिन कन्या उन्हें पसंद आई थी इसलिए उन्होंने शादी की । मई १९५३ में छोटुभाई और शारदाबहन की शादी हुई ।''

''वे गर्मियों के दिन थे...'' छोटुभाई शादी के यादगार मधुर अनुभवों की बात कर रहे थे: ''मैंने अमरीका जाने के लिए गेबेडियन कपड़े का सूट बनवाया था, गरम कपड़े का था इसलिये गरमी में तो उसे पहन नहीं सकता था फिर भी मैं तो वही सूट पहनकर शादी करने गया । उन दिनों लाईट-पंखे की सुविधा नहीं होती थी । लालटेन की गरमी और मंडप में यज्ञ की गरमी के साथ-साथ सूट की गरमी । मैं तो पसीने से तरबतर हो गया । मेरे पास दूसरा कॉटन का सूट था लेकिन उसे साथ लेकर नहीं आया था । फिर दूसरे दिन तो मैंने शर्ट और पायजामा ही पहना...''

इस प्रकार धूमधाम से छोटुभाई और शारदाबहन की शादी सम्पन्न हुई । तब छोटुभाई का नाम छोटाभाई था । लेकिन शारदाबहन के पिताजी का नाम भी छोटाभाई लल्लूभाई पटेल था । इसलिए उन्होंने फिर अपना नाम बदल लिया और छोटाभाई से छोटुभाई बन गये ।

सी.एल. पटेल के बारे में कुछ खास

१. **प्रिय पुस्तक :**

वचनामृत और शिक्षापत्री । यह दोनों ग्रंथ भगवान स्वामीनारायण ने समाज को भेंट किये हैं ।

२. **प्रिय पोशाक :**

सफेद कमीज और सफेद पेन्ट

३. **प्रिय भोजन :**

शाकाहारी सभी कुछ । स्वामीनारायण संप्रदाय के आदेशानुसार प्याज व लसून नहीं खाता ।

४. **प्रिय फिल्म :**

सामाजिक फिल्में पसंद हैं । अमिताभ बच्चन की 'बागबान' और राजेश खन्ना की 'अवतार' ।

५. **प्रिय कलाकार :**

राजकपूर और बलराज साहनी

६. **प्रिय खेल :**

क्रिकेट पसंद है ।

७. **प्रिय जगह :**

मैं बहुत घुमा हूँ । लेकिन विदेश में कोई भी जगह ऐसी नहीं है जिसने मुझे आकर्षित किया हों फिर भी नायग्रा फॉल्स और स्विट्जरलैन्ड अच्छा है । कैलास

मानसरोवर मुझे पसंद है । मैं अपने देश को अधिक महत्त्व देता हूँ क्योंकि पूरे विश्व में जो नहीं है वह सब कुछ यहाँ है ।

८. प्रिय भाषा :

गुजराती ।

९. इतिहास का प्रिय पात्र :

भूतकाल के इतिहास के पात्रों को मैं महत्त्व नहीं देता । लेकिन हाल ही के इतिहास में सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रेष्ठ पात्र मानता हूँ ।

१०. खुशी की क्षण :

गुजरात विद्युत बोर्ड में प्रथम नौकरी मिली उसे खुशी की क्षण मान सकता हूँ ।

११. दुःख की घड़ी :

१९६९ में पिताजी का स्वर्गवास और सन् २००८ में मेरे दामाद का स्वर्गवास हुआ तब दुःख की घड़ी थी ।

१२. गुस्सा ।

गुस्सा मुझे वंशानुगत मिला है । गुस्सा होने के बाद ऐसा लगता है कि गुस्सा नहीं करना चाहिए । गुस्सा आता है तब दो बातें होती हैं - सामने वाले व्यक्ति को दुःख पहुंचाते हैं और अपने पास जो ज्ञान है उसका पूरा उपयोग नहीं कर पाते हैं । जिस पर विश्वास किया हो यदि वह ठेस पहुंचाये अथवा नीतिमत्ता की डगर पर कोई न चले या फिर मेरे अहं को कोई ठेस पहुंचाये । तब मुझे गुस्सा आता है । गुस्सा मेरी कमजोरी है । कभी-कभी गुस्सा करता हूँ । मैं अपने गुस्से की तुलना दुर्वासा के साथ गुस्से के साथ करता हूँ । दुर्वासा को भी ज्ञान था कि गुस्सा करना बुरी बात है । लेकिन किसी को भी सही बात की

प्रतीति हों, इसलिए वे गुस्सा करते थे । वैसे गुस्सा तो दुर्वासा का गुण था । गुस्से में जो निर्णय लिया हों उससे किसी के साथ अन्याय न हों इस बात का मैं ध्यान रखता हूँ । मैं फरगेट एन्ड फरगीव (भूल जाने और क्षमा करने में) में विश्वास रखता हूँ ।

१३. आपका कोई सपना :

कोई सपना अधूरा नहीं है । छोटे व्यक्ति के रुप में मैंने बहुत कुछ पाया है। अब जो भी सपने हैं वह मेरे प्रमुखस्वामी महाराज के आशीर्वाद और संस्था के साथ जुड़े हुए सभी साथियों के मिले जुले प्रयासो से पूरे होंगे ।

१४. पसंदीदा नेता :

मुझे कोई भी नेता पसंद नहीं है । आज कल की बात करें तो सभी नेता अपनी कुर्सी सलामत रखने के इसी जुगाड़ में लगे रहते हैं । उन्हें प्रजा की जरा भी चिंता नहीं हैं । मैं इनमें से किसी को भी महत्त्व नहीं देता हूँ । मेरी दृष्टि में राजनेता के रुप में सरदार वल्लभभाई पटेल आदर्श व्यक्ति थे ।

१५. आर्थिक संघर्ष :

चारुतर विद्यामंडल के अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठने के पश्चात् कोई भी तकलीफ नहीं हुई है । इसके लिए मैं ब्रह्माजी की मूर्ति, भगवान स्वामीनारायण और प्रमुख स्वामी का आभारी हूँ ।

१६. गलत निर्णय :

मैंने आज तक ऐसा कोई भी निर्णय नहीं लिया है । किसी को शायद लगे कि मेरा कोई निर्णय गलत है । लेकिन मुझे ऐसा कभी भी नहीं लगा है । मेरे पिताजी ने मुझे सलाह दी थी कि सरकारी नौकरी करने जा रहे हो तो किसी के साथ अन्याय न हो इसका ध्यान रखना ।

१७. फुर्सत के समय :

जो जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई है उसे चारुतर विद्यामंडल का विकास, २१वी सदी और उसके बाद के वर्षों में उपयोगी साबित हों ऐसे नये अभ्यासक्रमों को तैयार करने के बारे में और साथ साथ बाप-दादा के व्यवसाय खेती में क्या करना चाहिए जिससे जरुरी खर्चे निकल सकें इन्हीं सब बातों के बारे में फुर्सत में सोचता हूँ ।

१८. देश-विदेश की युनिवर्सिटी :

किसी भी युनिवर्सिटी में व्यक्ति विशेष अपना जीवन कैसे अधिक से अधिक अच्छा बना सकता है और दूसरों को कैसे अधिक से अधिक उपयोगी साबित हो सकता है इस बात का ज्ञान नहीं दिया जाता । आद्य स्थापकों भाई काका और भीखाभाई साहब ने तक्षशिला और नालंदा जैसी विद्यापीठों के सपने के साथ चारुतर विद्यामंडल की स्थापना की थी । धीरे-धीरे उस दिशा में अग्रसर होते हुए वैसा वातावरण वल्लभ विद्यानगर में पैदा करने के लिए हम प्रयत्नशील हैं ।

१९. जीवन का मूलमंत्र :

स्वयं को स्वयं के विकास और समाज के विकास के साथ जोड़ना तथा जीवन में सेवा और समर्पण भाव का समावेश करना ।

२०. जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव डालनेवाला व्यक्ति :

प्रमुखस्वामी ।

२१. प्रमुखस्वामी के साथ परिचय :

मैं १९७७ में विद्यानगर में रहने आया तब से प्रमुखस्वामी के संपर्क में आया । आणंद निवासी मेरे मित्र रावजीभाई पटेल के कारण प्रमुखस्वामी से

मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । रावजीभाई अपनी बेटी की शादी के लिए आशीर्वाद लेने मुझे अपने साथ प्रमुखस्वामी के पास ले गये थे । रावजीभाई ने कहा था कि स्वामीजी, मेरे इस मित्र को भी अपनी बेटी की शादी करनी है, आप उसे भी आशीर्वाद दीजिए... और स्वामीजी के आशीर्वाद से मेरी बेटी की शादी जनवरी में हुई थी । प्रमुखस्वामी से मिलने से पहले वडताल के कानजी भगत के कारण वडताल संप्रदाय में मैं रुचि रखता था । मैं यहां रहने आया तब अपने मकान में कानजी भगत के चरण के पदचिह्न करवाये थे । उन्होंने ही मेरे मकान का नाम 'श्री सहजानंद स्वामी भुवन' रखा था । मेरी बेटी की शादी के बाद प्रमुखस्वामी महाराज ने भी मेरे घर पधारकर उसे पावन किया था ।

२२. प्रमुखस्वामी के साथ संपर्क से कोई बदलाव :

पहले मैं तंबाकू की खेती करता था । लेकिन २२ वर्षों से तंबाकू की खेती करना छोड़ दिया है और उसके बदले नीलगिरी उगाता हूँ ।

२३. खेती और बुआई :

मैं अपने खेत में औषधियों के प्लांट्स बोता हूँ । २०० पेड़ आंवले के हैं और एलोवेरा (ग्वारपाठा) के ४० हजार पौधे हैं । बैलगाडियां भरकर आम उतरते हैं । खिरनी (रायण) और महुवा (महुडा) तो अनगिनत हैं । पुराने दस आम के पेड़ और खिरनी के तीन आज भी रहने दिये हैं ।

२४. पुनःजन्म में विश्वास :

पुनःजन्म नहीं, मुक्ति चाहिए । ८४ लाख अवतारों में भटकने के बाद अब मुक्ति चाहिए । मेरे गुरु प्रमुखस्वामी ने कहा है कि तुझे मोक्ष जरुर मिलेगा । पुनःजन्म लेना पड़े तो समझना चाहिए कि इस जन्म में हमने कुछ भी नहीं किया है ।

२५. अफसोस :

उंगली पकड़कर किसी को आप चलना सिखाओ और फिर वही आगे चलकर आपको धोखा दे तो अफसोस होता है ।

२६. आदर्श व्यक्ति :

जो हमेशा स्वयं में अवगुण और दूसरों में गुण देखे उसे आदर्श व्यक्ति कह सकते हैं । दूसरों के सुख में ही अपना सुख ढूंढने वाला आदर्श व्यक्ति होता है ।

२७. किसी विद्यार्थी का यादगार अनुभव :

एक ठेले वाले के बेटे के ८९ प्रतिशत अंक आये थे, लेकिन उच्च शिक्षा प्राप्त कर सके इतनी उसकी हैसियत न थी । इसलिए उसने पत्र लिखकर सेमकोम में पढ़ने की इच्छा व्यक्त की । मैंने उसकी फीस माफ करवा दी । वह सेमकोम में पढ़ा और आज उसकी तनख्वाह १४ लाख रुपये हैं ।

२८. वाहन चलाना और साहस :

मेरे पिताजी ने १९६३ में मुझे लेमरेटा स्कूटर खरीद दिया था । मैं दो बार स्कूटर पर राजकोट से आणंद तक आया था । १९६६ में मैंने १६ हजार रुपयों में फर्ग्युसन ट्रैक्टर खरीदा था । फिर लर्निंग लायसंस बनवाया । खाना खाकर रात को ८.३० बजे मैं राजकोट से निकला और पूरी रात ड्राइविंग किया । वाया विरमगाम और सरखेज होकर दूसरे दिन सुबह ९.३० बजे मैं आणंद पहुँचा था । उन दिनों रास्ते अच्छे नहीं थे । बरसात के दिन थे । झरमर बरसात भी होती रहती । फिर भी मैंने ऐसे वातावरण में भी लगातार १३ घंटे तक वाहन चलाया था जो उस समय में काफी हिम्मत का काम था ।

२९. चरोतर भूमि :

चरोतर का कोई भी व्यक्ति वह दूसरे क्षेत्र के उसी जाति के लोगों से अलग

होते हैं क्योंकि चरोतर की धरती में ऐसा गुण है । उदाहरण के तौर पर भालिया गेहूँ यहाँ नहीं उगता उसे भाल प्रदेश में ही उगाना पड़ता है । उसी प्रकार यहां का कोई भी व्यक्ति फिर वह पटेल, बनिया या ब्राह्मण जाति का हो - सभी यहां पर खिलते हैं । व्यक्ति किसी भी जात का हो वह सर्वोच्च स्थान पर पहुँचता है । चरोतर की भूमि में वात्रक और मही सागर के बीच के विस्तार में कभी भी अकाल न पड़े । ऐसा भगवान स्वामीनारायण ने अपने गुरु के पास से वरदान प्राप्त किया था । डाकोर से सोजित्रा तक का विस्तार और मही और वात्रक के बीच के विस्तार को चरोतर कहा जाता है । चरोतर की किसी भी धर्म के किसी भी व्यक्ति में विशेषता पाई जाय तो वह गुण इस धरती के पानी का है ।

पांडुरंग शास्त्री आठवले ने कहा था कि : ''मैं किसी के पास कुछ भी मांगता नहीं हूँ । मुझे मांगने की आदत भी नहीं है लेकिन इस धरती के सारस्वतों के पास ऐसा मांगता हूँ कि आप समग्र दुनिया को उपयोगी हो सके ऐसे नागरिकों को तैयार करो...'' चरोतर की धरती का यह गुण हैं, यहां से विशिष्टता प्राप्त होती है ।

३०. जन्माक्षर और ज्योतिष में विश्वास :

मैंने अपने जन्माक्षर का कभी भी अभ्यास नहीं किया है । लेकिन मुझे हमेशा से ऐसा आभास होता था कि किसी विशिष्ट कार्य के लिए ही मेरा जन्म हुआ है । मैं अध्यक्ष पद के लिए चुनाव लड़ रहा था तब एक ज्योतिषी ने मुझे कहा था कि आपके ग्रह बहुत शक्तिशाली हैं और आपको पराजित कर सके एसे किसी का जन्म नहीं हुआ है । मुंबई के सुनीलभाई ने कहा था कि बीस में से १८ वोट भी आपके विरुद्ध होंगे फिर भी आप ही जितोगे और हकीकत में ऐसा ही हुआ ।

३१. जीवन की फिलसूफी :

वजु कोटक के यह शब्द मेरे जीवन की फिलोसोफी हैं : ''खुद को सही लगता हों लेकिन दूसरों की आलोचना के डर से जो लोग कदम आगे नहीं बढ़ाते उनके लिए प्रगति जैसा शब्द व्यर्थ है । सेवा के क्षेत्र में जिसने भी थोड़ा बहुत पाया है उन्होंने कभी भी दूसरों की परवाह नहीं की है, न ही उनसे सलाह ली है और न ही उनका अभिप्राय मांगा है । वैसे तो हर कदम पर आपको सलाह-मशविरा करने वाले मिल ही जाते हैं । लेकिन यदि हकीकत में आपको कुछ कर दिखाना है तो अपने मन की बात पर अटल रहने के शक्ति को दृढ़ बनाना चाहिए । ऐसा करने में भले तुम गलती करो लेकिन इस भूल से जो ज्ञान प्राप्त होता है वह पुस्तकों के पढ़ने से या फिर दूसरों की सलाह से नहीं मिलता। रंग पक्का चढ़ता है । कहने का अर्थ यह नहीं है कि अनुभवियों की सलाह पर ही जीवन का नक्शा बनाओ... वह भी योग्य नहीं है, वह तो बुद्धि की सरेआम निलामी है ।''

जिन महान सत्ताधारियों ने समग्र जगत को जड़-मूल से हिलाकर रखा है, यदि उनके जीवन का अभ्यास करें तो हम देखेंगे कि उन्होंने किसी की भी परवाह किये बगैर जीवन के साथ जुआ खेला है और अपना सब कुछ खोकर भी बहुत कुछ पाया है । ऐसे जो दृढ निश्चय वाले पुरुष होते हैं उन्हीं के इतिहास लिखे जाते हैं और उन्हीं की प्रतिमाएं चारों और लगाई जाती हैं । किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए लोहे जैसा निश्चय करना बहुत जरुरी है । संपूर्ण संसार की शक्ति सामने आ जाय फिर भी जो स्वयं ने शुभ माना है उसे नहीं छोड़नेवाला ही इस दुनिया में कुछ कर सकता है ऐसे ही व्यक्ति वंदनीय हैं । विनाश की ओर बढ़ रहा यह संसार ऐसे ही चंद लोगों की महानता और अच्छाई के कारण टिका हुआ है । परमाणु विस्फोटक बनाने वालों की इस दुनिया में

प्रतिमाएं नहीं लगेंगी, चाहे उन्होंने कितनी ही अद्‌भुत शक्तियों को बनाया हों। लेकिन बेजान प्रजा में जो अपनी पूजा से परमाणु जैसी शक्ति पैदा करता है उसकी पूजा लोग पीढियों तक करते हैं ।

हमारे द्वारा शुरु किये गये कार्य में निर्मल पानी जैसी शुद्ध भावना होगी, किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं होगा तो फिर भले हमारी भूल भी हों तो भी इन्हीं भूलों में से भी परम प्रकाश मिलेगा । दूसरों की आलोचना के डर से घर में दुबक कर बैठने से कुछ भी हासिल नहीं होता है ।

३२. शिक्षा और सेवा :

मेरे पिताजी बीमार हुए तब डॉ. मणिभाई वाळंद उनकी ट्रीटमेन्ट करते थे। तब मेरे मन में आया कि डॉक्टर का व्यवसाय सबसे अच्छा है । यदि कोई पैसों के अभाव में डॉक्टर न बन सकें तो उसकी मेडिकल की पढ़ाई का पूरा खर्चा उठाने का संकल्प लिया था जिसे पूरा करने का मौका भी मिल गया । उन्हीं दिनों एक कुम्हार के बेटे के अच्छे नंबर आये थे, मैंने उसकी पढ़ाई का संपूर्ण खर्चा उठाया था और वह डॉक्टर बना । फिर मैंने बहुत से डॉक्टर और इन्जीनियर बनाए हैं ।...

•

INSTITUTIONS OF CHARUTAR VIDYA MANDAL

The Institutes established by Shri Bhaikaka

1947 V P & R P T P Science College

1948 Birla Vishwakarma Mahavidyalaya (Engineering College)

1949 G J Sharda Mandir

1951 B J Vanijya Mahavidyalaya

The Institutes established by Dr H M Patel

1958 B & B Institute of Technology

1959 N A & T V Patel Arts College

1960 Ipcowala-Santram College of Fine Arts

1963 M U Patel Technical High School

1965 H M Patel Institute of English Training & Research

1966 S D Desai High School

1969 Rama-Manubhai Desai College of Music & Dance

1970 I B Patel English Teaching School (Secondary)

1970 I B Patel English Teaching School (Primary)

1971 S M Patel College of Home Science

1971 Vallabh Vidyanagar Technical Institute

1977 CVM Higher Secondary Complex - General Stream (TV Patel)

1977 CVM Higher Secondary Complex - Science Stream (RPTP)

1977 CVM Higher Secondary Complex - Vocational Stream (Home Science)

1980 Arvindbhai Patel Institute of Environmental Design

1981 A R & G H Patel Institute of Pharmacy

1982 H M Patel Career Development Centre (CDC)

1987 M S Mistry Primary School

The Institutes established by Dr C L Patel

1996 Set up Natubhai V Patel College of Pure & Applied Sciences (NVPAS)

1996 Founded G H Patel College of Engineering & Technology (GCET)

1997 Founded Sardar Gunj Mercantile Cooperative Bank Ltd. English Medium College of Commerce & Management (SEMCOM)

1999 Institute of Science & Technology for Advanced Studies & Research (ISTAR)

1999 Sophisticated Instrumentation Centre for Applied Research & Training (SICART)

2000 A D Patel Institute of Technology (ADIT)

2001 Shapurbhai I Patel Centre for Learning

2001 Chimanbhai M U Patel Industrial Training Centre

2002 S S Patel College of Physical Education

2003 C Z Patel College of Business & Management

2003 Indukaka Ipcowala College of Pharmacy (IICP)

2004 Waymade College of Education

2005 Govindbhai Jorabhai Patel Ayurved College & Surajben Govindbhai Patel Ayurved Hospital

2005 Ashok & Rita Patel Institute of Integrated Study in Biotechnology & Allied Sciences (ARIBAS)

2008 Vasantiben & Chandubhai Patel English School (CBSE)

2008 Sumantbhai Parshottambhai Patel Primary School

2009 Centre for Studies & Research on Life & Works of Sardar Vallabhbhai Patel (CERLIP)

2009 Institute of Language Studies & Applied Social Sciences (ILSASS)

2009 Madhuben & Bhanubhai Patel Institute of Computer & Communication Technology & Research Centre for Women

2009 CVM Institute for Degree Course in Pharmacy

2009 CVM IAS Academy

Dr. Chhotubhai L Patel: Chronology

Born on April 10, 1935 at Kasor, near Anand.

1945	Joined D. N. High School, Anand and Matriculated in 1951
1952	Joined Vithalbhai Patel Mahavidyalaya, Vallabh Vidyanagar.
1953	Got married to Smt. Sharadaben of Samarkha village (16th May)
1955	Joined M. G. Science College, Ahmedabad.
1956	Admitted to Birla Vishwakarma Mahavidyalaya in 3yr-Diploma course in Mechanical Engineering
1960	Studied for Electrical Engineering
1961	Took job in Gujarat Electricity Board as Technical Incharge, rose to be Deputy Engineering and Executive Engineer. (March)
1981	Left Gujarat Electricity Board.
1988	Joined Charutar Vidya Mandal as Hon. Estate Manager and then Hon. Joint Secretary.
1990	Elected to the Syndicate of Sardar Patel University and served for fifteen years.
1993	Again elected to the Syndicate of Sardar Patel University.
1994	Rose to be Chairman of Charutar Vidya Mandal as Dr. H M Patel's successor (April)

SOME OF THE MANY HONOURS EARNED

2000	Charotar Ratna (Jewel of Charotar region) award by the Rotary Club International at Anand.
2001	Doctor of Letters (Honoris Causa) by Sardar Patel University
2004	Shalin Manav Ratna (Jewel among Graceful Humans) by Anupam Mission
2005	Doctor of Literature (Honoris Causa) by Anand Agricultural University.
2005	Rajiv Gandhi Shiromani Award by Global Economic Council, New Delhi
2006	Rashtriya Rattan Award by Citizens International Peace Society, New Delhi.
2008	Sardar Patel Award by Sardar Patel Trust, New Delhi
2008	Divya Bhaskar Declared him as one of the Eminent Personalities of Gujarat under 'The Power 100' list.

INSTITUTIONS ESTABLISHED

1996	Set up Natubhai V Patel College of Pure & Applied Sciences (NVPAS)
1996	Founded G H Patel College of Engineering & Technology (GCET)
1997	Founded Sardar Gunj Mercantile Cooperative Bank Ltd. English Medium College of Commerce & Management (SEMCOM)
1999	Institute of Science & Technology for Advanced Studies & Research (ISTAR)
1999	Sophisticated Instrumentation Centre for Applied Research & Training (SICART)
2000	A D Patel Institute of Technology (ADIT)
2001	Shapurbhai I Patel Centre for Learning
2001	Chimanbhai M U Patel Industrial Training Centre
2002	S S Patel College of Physical Education
2003	C Z Patel College of Business & Management
2003	Indukaka Ipcowala College of Pharmacy (IICP)
2004	Waymade College of Education
2005	Govindbhai Jorabhai Patel Ayurved College & Surajben Govindbhai Patel Ayurved Hospital
2005	Ashok & Rita Patel Institute of Integrated Study in Biotechnology & Allied Sciences (ARIBAS)
2008	Vasantiben & Chandubhai Patel English School (CBSE)
2008	Sumantbhai Parshottambhai Patel Primary School
2009	Centre for Studies & Research on Life & Works of Sardar Vallabhbhai Patel (CERLIP)
2009	Institute of Language Studies & Applied Social Sciences (ILSASS)
2009	Madhuben & Bhanubhai Patel Institute of Computer & Communication Technology & Research Centre for Women
2009	CVM Institute for Degree Course in Pharmacy
2009	CVM IAS Academy

डॉ. सी.एल. पटेल का वंश वृक्ष

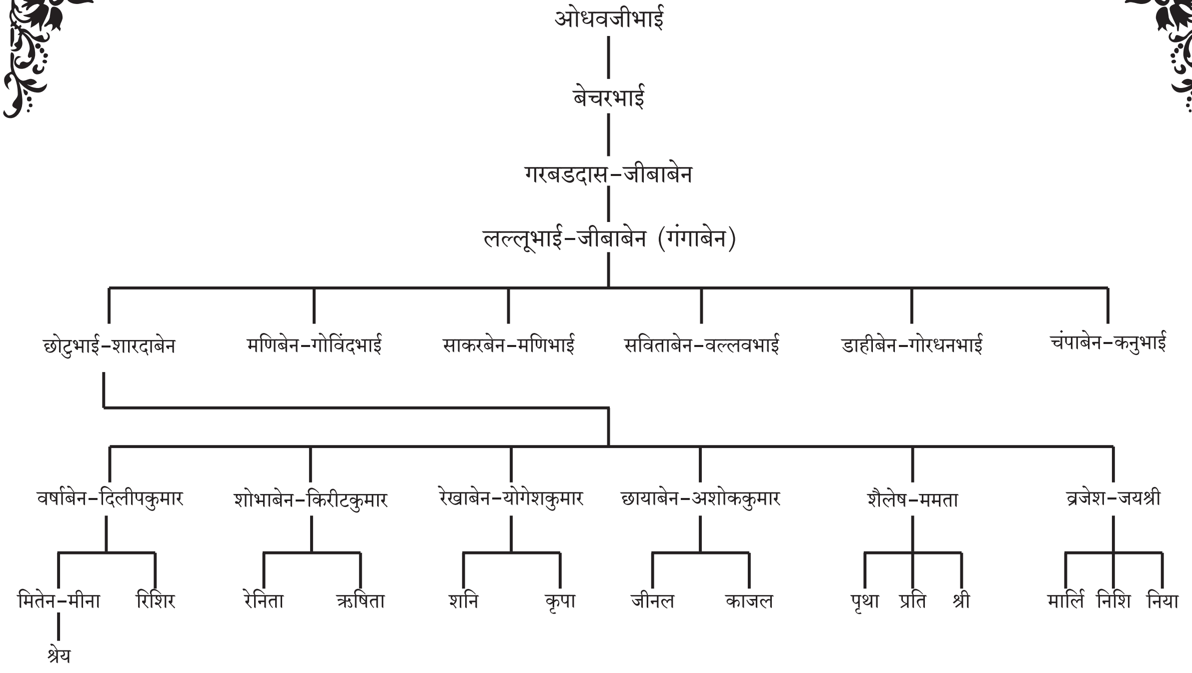

श्रीमती संगीता शुक्ला

श्रीमती संगीता शुक्ला पिछले २० वर्षों से लेखन प्रवृत्ति के साथ जुड़ी हुई हैं, उनके लेख और कॉलम ख्यातनाम अखबारों एवं मेगेजीनों में राजनीतिक, धर्म-कर्म, सांस्कृतिक एवं प्रवासन विषयों पर प्रसिद्ध होते रहते हैं । दिल्ली में जो गुजराती हैं वे करीब १०० साल पहले आकर बसे हुए हैं, लेकिन गुजराती में साप्ताहिक निकालने का सर्वप्रथम साहस १९९५ में 'बंसी' के नाम से प्रसिद्ध करने का श्रेय संगीता को जाता है । इसके अलावा भाषांतरकार के रुप में भी उन्होंने काफी अनुभव प्राप्त किया है । श्रीमती संगीता ने 'आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब' के संपूर्ण ग्रंथ का श्लोक एवं उसके अर्थ के साथ गुजराती में भाषांतर किया है । हाल ही में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा लिखित पुस्तक 'ज्योतिपुंज' का भी संगीता ने गुजराती से हिन्दी में अनुवाद किया है ।

पारुल टीना दोशी (पीएच.डी)

पारुल टीना दोशी ख्यातनाम पत्रकार, लेखिका एवं शोधकर्ता हैं। मुंबई के सौराष्ट्र ट्रस्ट के प्रतिष्ठित प्रकाशन ''जन्मभूमि'' और ''जन्मभूमि प्रवासी'', एक्सप्रेस ग्रुप के प्रतिष्ठित दैनिक ''समकालीन'' एवं साप्ताहिक ''चित्रलेखा'' में उन्होंने सालों तक लेखन कार्य किया हैं । गुजरात के प्रतिष्ठित दैनिक अखबार ''संदेश'', ''दिव्यभास्कर'', ''समभाव'', ''फूलछाब'', ''कच्छमित्र'' और ''अहा जिंदगी'' नामक पत्रिका के साथ भी जुड़कर उन्होंने अपनी लेखनी को नया आयाम दिया। लंडन से प्रकाशित साप्ताहिक ''गुजरात समाचार'' और ''एशियन वॉइस'' के प्रोजेक्ट-इन-चार्ज एवं एडिटोरियल कॉ-ऑडिनेटर के रुप में भी उन्होंने अपनी सेवाएं प्रदान की हैं।

महात्मा गांधी द्वारा स्थापित गूजरात विद्यापीठ में कुलनायक (वाईस चान्सलर) डॉ. सुदर्शन आयंगार के मार्गदर्शन में विनोबा भावे प्रेरित ''भूदान आंदोलन की राष्ट्रीय समीक्षा'' प्रकल्प पर लगातार दो साल तक उन्होंने शोध कार्य किया था। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारत के आदिवासी आंदोलनों के बारे में शोधनिबंध लिखा सौराष्ट्र युनिवर्सिटी के समाज विद्या भवन से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। प्राचीनकाल की भारतीय स्त्रियों पर आधारित शोध कार्य उनकी रुचि के विषय हैं । अब चारुतर विद्यामंडल के प्रकल्प भारतीय महिला विश्वकोश पर कार्यरत हैं।

उन्होंने गुजराती भाषा में दस पुस्तकें लिखी हैं, जिसमें से ''प्राचीन काल में स्त्री'', ''नारी तूं निराली'' और ''मानुषी : आधी कल्पना आधी काया'' प्राचीन और ऐतिहासिक काल की स्त्रियों के बारे में शोध कार्य पर आधारित हैं। उनके अन्य पुस्तकों में विकलांग व्यक्ति की संघर्ष कथा ''पग विनानां पगलां'' (बिना पांव के पदचिह्न), महानुभावों की मुलाकातों पर आधारित ''गूर्जर गौरव'' और ''गूर्जर गरिमा'', सच्ची अपराध कथाओं पर प्रकाश डालती ''अजायब आलम अपराधनी'', ''चंदनचोर वीरप्पन की जीवनकथा'', ''वीरप्पन : मानव के दानव'', आतंकवाद पर आधारित ''आतंकवाद नी अगनज्वाला'' और राजकीय हास्यव्यंग्य पर आधारित ''जोडे जोडे कजोडे'' का समावेश होता है । ''गूर्जर गरिमा'' को रेखाचित्र के लिए गुजराती साहित्य परिषद का और ''प्राचीन काल में स्त्री'' को गुजरात साहित्य अकादमी का शोध के लिए पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उन्हें गुजरात दैनिक अखबार संघ और महाराष्ट्र सरकार के पत्रकारत्व पारितोषिक भी प्राप्त हुए हैं।

Lajja : (02692) 233864